A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 1 दिसंबर, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-92 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

फ्रेम में कार्तिक पूर्णिमा का चांद

फोटो : पंकज शर्मा

सुप्रभात

जिन्होंने कांटे बिछाए राहों में
उनका मकसद फूल थे
उनके हाथ जख्मी हुए
नजरें फूल हुई
जिन्होंने तोड़ दिए रिश्ते
इल्ज़ाम लिया अपने सर
बेवफाई का
उन्होंने एक रिश्ते के एवज में
बचाए बाकी रिश्ते
जिन्होंने नही खोली जुबान
उन पर गोलियों की नहीं
गालियों की बौछार हुई
उनकी चुप्पी
छुपे राजों की आग के लिए पानी हुई
जिन्होंने अनसुना किया
तमाम बेफजूल बातों को
उन्होंने झगड़े के बीजों को कुचल दिया
वह निर्मम नही
शांतिदूत है।

– अनुराधा मैंदोला

महाराष्ट्र में 5 दिसंबर को शपथ लेगी नई सरकार

शिंदे की तबीयत बिगड़ी, मुंबई से गांव भेजे गए डॉक्टर्स

भाजपा विधायक दल की बैठक टली, अब 3 दिसंबर को

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का रिजल्ट आए 7 दिन बीत चुके हैं। भाजपा, शिवसेना शिंदे और एनसीपी अजित पवार गुट यानी महायुति ने 288 में से 230 सीटें जीतीं, लेकिन अब शपथ की तारीख तय हो गई है। 5 दिसंबर को शपथ ग्रहण होगा। एकनाथ शिंदे डिप्टी सीएम का पद लेने को तैयार हैं, लेकिन गृह मंत्रालय पर अड़े हुए हैं। 29 नवंबर को शिंदे दिल्ली में गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात के बाद मुंबई लौटे और सभी कार्यक्रम रद्द कर अपने गांव सातारा निकल गए। गांव में उनकी तबीयत बिगड़ गई है। मुंबई से डॉक्टरों की टीम पहुंची है। इस बीच, भाजपा विधायक दल की बैठक भी दो दिन आगे बढ़ गई है।

गृह और वित्त मंत्रालय पर अटकी है बात

शिंदे सरकार में डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस के पास ही गृह मंत्रालय था। वो इस मंत्रालय को छोड़ना नहीं चाहते हैं। वहीं शिंदे गुट का तर्क है कि अगर डिप्टी सीएम का पद हमें मिल रहा है तो गृह मंत्रालय भी उन्हें ही मिलना चाहिए। शाह के साथ बैठक में भी इसका हल नहीं निकल पाया। पहले गृह मंत्रालय देवेन्द्र फड़णवीस के पास था। इसलिए फड़णवीस किसी भी हालत में गृह मंत्री का पद छोड़ने को तैयार नहीं हैं। माना जा रहा है कि इस विवाद के चलते शाह की बैठक में कैबिनेट गठन पर कोई समाधान नहीं निकल सका।

प्रधानमंत्री के चंडीगढ़ दौरे को लेकर प्रशासन सख्त

चंडीगढ़ (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 3 दिसंबर को पीईसी (पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज) में होने वाले कार्यक्रम की तैयारियां तेज हो गई हैं। शुक्रवार देर रात प्रशासन और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने पीईसी पहुंचकर कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने अधूरे काम जल्द पूरे करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही चंडीगढ़ प्रशासक ने सचिवालय में विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की। प्रधानमंत्री का यह दौरा 1 जुलाई से देशभर में लागू हुए 3 नए कानूनों की समीक्षा और चंडीगढ़ पुलिस द्वारा इन्हें सबसे पहले लागू करने के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है। पीईसी में आयोजित इस कार्यक्रम में कई राज्यों के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के साथ करीब 15 हजार लोग शामिल होंगे। प्रधानमंत्री का हेलीकॉप्टर राजिंदरा पार्क में उतरेगा, जहां से वे सड़क मार्ग से पीईसी पहुंचेंगे।

मुख्यमंत्री ने राजाभोज विमानतल पर विदेश यात्रा से लौटने पर आयोजित अभिनंदन समारोह को किया संबोधित

ब्रिटेन व जर्मनी की यात्रा मध्यप्रदेश के विकास में मील का पत्थर साबित होगी: डॉ. मोहन यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ब्रिटेन व जर्मनी की छह दिवसीय विदेश दौरे से भोपाल लौटने पर राजाभोज विमानतल पर आयोजित अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की आर्थिक व्यवस्था से मध्यप्रदेश को ब्रिटेन में 60 हजार करोड़ और जर्मनी में 18 हजार करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। निवेश संवर्धन एवं औद्योगिक विकास के लिए की गई ब्रिटेन व जर्मनी की यात्रा के दौरान हमने एक-एक मिनट का उपयोग प्रदेश की बेहतरी के लिए किया है। निवेश के संबंध में ब्रिटेन और जर्मनी की विदेश यात्रा मध्यप्रदेश के विकास में मील का पत्थर साबित होगी। मध्यप्रदेश को ब्रिटेन व जर्मनी में मिले निवेश प्रस्तावों के लिए मैं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का आभार व्यक्त करता हूं कि उनके नेतृत्व में देश की सुदृढ़ अर्थव्यवस्था व आर्थिक नीतियों से प्रभावित होकर ब्रिटेन और जर्मनी जैसे देश मध्यप्रदेश में निवेश करने के लिए आतुर हैं। हम सभी प्रदेशवासी मिलकर मध्यप्रदेश को देश का नंबर एक राज्य बनाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के 6 दिवसीय ब्रिटेन व जर्मनी दौरे से लौटकर स्टेट हैंगर पर उप मुख्यमंत्री, प्रदेश शासन के मंत्री, पार्टी पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि व कार्यकर्ताओं ने अभिनंदन किया।

जहां रोजगार मिलेगा, मध्यप्रदेश वहां पहले खड़ा दिखाई देगा

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि यह एक सुखद संयोग है कि मैं ब्रिटेन और जर्मनी की यात्रा पर था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की आर्थिक व्यवस्था के कारण भारत ने पिछले वर्ष ही ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बना है।

भाजपा सरकार की कार्यप्रणाली से प्रभावित होकर जर्मनी ने किया निवेश

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कुछ माह पहले भोपाल के अचारपुरा में एक फैक्ट्री का शुभारंभ किया गया था। यहां जर्मनी के अधिकारियों ने देखा कि मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार किस तरह से औद्योगिक निवेश के लिए कार्य कर रही है। उद्योगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने और निवेश के अनुकूल वातावरण होने के कारण ही जर्मनी की कंपनी ने अचारपुरा में निवेश किया। ब्रिटेन व जर्मनी की यात्रा मध्यप्रदेश के और बेहतर स्थान पर पहुंचाने के लिए मील का पत्थर साबित होगी। सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में निवेश के लिए मध्यप्रदेश को 25 हजार करोड़ का प्रस्ताव मिला है। समाज आधारित रिसर्च के लिए भी मध्यप्रदेश सरकार ने एक विश्वविद्यालय से एमओयू किया है। मध्यप्रदेश के विकास के लिए संभाग स्तर पर रीजनल इंडस्ट्रियल कॉन्क्लेव बहुत कारगर साबित हो रहे हैं। आगामी 7 दिसंबर को नर्मदापुरम में रीजनल इंडस्ट्रियल कॉन्क्लेव करने जा रहे हैं। मध्यप्रदेश के समग्र विकास के लिए प्रदेश के सभी जिलों का विकास किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हम और आप सभी मिलकर मध्यप्रदेश को देश का सबसे बेहतर राज्य बनाने के लिए कार्य करेंगे।

– विस्तृत समाचार पेज 2 देखे

भीषण 'ठंड' और कोहरे के आगोश में उत्तर भारत

● कश्मीर में -3.4ए, एमपी में 36 साल का रिकॉर्ड टूटा ● हिमाचल में बर्फबारी का अलर्ट, 5 राज्यों में घना कोहरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में बर्फबारी के कारण देश के उत्तरी राज्यों में ठंड का असर बरकरार है। उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, बिहार, पंजाब और हरियाणा में घने कोहरे का भी अलर्ट जारी किया गया है। हिमाचल प्रदेश के पांच जिले किन्नौर, कुल्लू, लाहौल स्पीति, कांगड़ा और चंबा में 3 दिन तक बर्फबारी का अलर्ट है। इन जिलों में न्यूनतम तापमान में गिरावट दर्ज हो सकती है। उधर, कश्मीर में ठंड लगातार बढ़ जा रही है। पहलगाम में रात का तापमान माइनस 3.4 डिग्री तक पहुंच गया है। श्रीनगर में तापमान माइनस 1 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। उत्तरी राज्यों में बर्फबारी के कारण ठंडी हवाओं से मध्य प्रदेश में भी तापमान गिर रहा है। भोपाल में नवंबर का महीना 36 साल में सबसे ज्यादा ठंडा रहा। यहां पारा 8.2 डिग्री पहुंच चुका है। बंगाल की खाड़ी से उठे साइक्लोन फेंजल के असर के कारण तमिलनाडु के कई जिलों में बारिश का

रेड अलर्ट जारी किया गया है। यहां पिछले 4 दिनों से लगातार बारिश से बाढ़ जैसे हालात भी बन गए हैं। कई जिलों के स्कूल-कॉलेजों की छुट्टी कर दी गई है। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की कई टीमें रेस्क्यू के लिए तैनात हैं। दिल्ली में 2 दिन पहले यानी 28 नवंबर को इस सीजन की सबसे ठंडी रात दर्ज की गई। आईएमडी के अनुसार गुरुवार को तापमान 10.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इससे पहले 21 नवंबर की रात 10.2 डिग्री सेल्सियस और 27 नवंबर को 10.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। दिन में दिल्ली का अधिकतम तापमान नॉर्मल से एक डिग्री ज्यादा 27 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 1 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

बस खाई में गिरी, बच्चे समेत चार की मौत

खरगोन में 18 यात्री घायल, 2 जेसीबी की मदद से फंसे लोगों को निकाला

खरगोन (नप्र)। खरगोन जिले में शनिवार को यात्री बस अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में गिर गई। हादसे में तीन महिलाओं और एक बच्चे की मौके पर मौत हो गई। 18 यात्री घायल हुए हैं। हादसा खरगोन जिला मुख्यालय से 42 किलोमीटर दूर बड़वानी जिले से लगे जिरातपुरा फाटे पर हुआ। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव और घायलों को जिला अस्पताल भिजवाया है।

जानकारी के मुताबिक बस खरगोन से दोपहर 12.10 बजे आलीराजपुर के लिए निकली थी। इसमें 25 से 30 यात्री सवार थे। इस दौरान जिरातपुरा फाटे के पास बस अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में पलटी गई। सूचना के बाद मौके पर सेगांव पुलिस पहुंची और रेस्क्यू शुरू किया। कुछ देर बाद तहसीलदार भी घटनास्थल पर पहुंच गए।

खाई में गिरी बस को 2 जेसीबी की मदद से सीधा कर नीचे फंसे लोगों को बाहर निकाला गया। सभी घायलों को ग्रामीणों की मदद से सेगांव अस्पताल लाया गया। यहां से 11 गंभीर घायलों को जिला अस्पताल पहुंचाया गया है। खरगोन एसपी धर्मराज मीना ने बताया कि बस सेगांव से करीब 500 मीटर आगे मोड़ पर पलटी। बस कंडक्टर को हिरासत में लिया गया है।

इन यात्रियों की मौत हुई

आरती पति धनिया चौहान (28) निवासी रणगांव बडवानी

वेदांत पिता भारत मंडलोई (8 माह) निवासी ग्राम गोलवाडी सेगांव

अज्ञात महिला उम्र करीब 45 साल

अज्ञात महिला उम्र करीब 40 साल

बस में सवार 15 यात्री नर्मदा परिक्रमा पर निकले थे

बस रोज की तरह खंडवा से आलीराजपुर के लिए रवाना हुई थी। इसमें दमोह जिले के 15 यात्री नर्मदा परिक्रमा पर जाने के लिए सवार हुए थे। बस में बुरहानपुर, महाराष्ट्र और खरगोन के अलग-अलग स्थानों के यात्री सवार थे। यह खरगोन से दोपहर 12.10 बजे निकलती है। नर्मदा परिक्रमा पर जा रहे सभी यात्री आलीराजपुर तक जाने वाले थे। वहां से उन्हें पैदल नर्मदा परिक्रमा करते हुए गुजरात पहुंचना था।

संक्षिप्त समाचार

संभल जा रहे सपा विधायक समेत 10 नेता हिरासत में

लखनऊ/संभल (एजेंसी)। संभल हिंसा का आज 7वां दिन है। संभल में हालात धीरे-धीरे सामान्य हो रहे हैं, लेकिन शनिवार को लखनऊ में सियासी सरगर्मी बढ़ गई। सपा डेलिगेशन के संभल जाने के ऐलान के बाद नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय के घर के बाहर फोर्स तैनात कर

दी। सपा प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल को नजरबंद किया गया। डेलिगेशन में माता प्रसाद पांडेय समेत 5 सांसद और 4 विधायक शामिल थे। मुरादाबाद में सपा विधायक पिंकी यादव समेत 10 नेताओं को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। वहीं, बरेली में 100 से ज्यादा सपा कार्यकर्ताओं को पकड़ा गया।

आरजी कर 'करप्शन' केस में सीबीआई की चार्जशीट नामंजूर

कोलकाता (एजेंसी)। आरजी कर हॉस्पिटल में करप्शन मामले में सीबीआई की चार्जशीट कोर्ट ने शुक्रवार को नामंजूर कर दी। राज्य सरकार के किसी कर्मचारी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल करने के लिए जरूरी मंजूरी उपलब्ध न होने की वजह से सीबीआई की विशेष अदालत

चार्जशीट स्वीकार नहीं की। जांच एजेंसी ने मामले में पूर्व प्रिंसिपल डॉ संदीप घोष को मुख्य आरोपी बनाया है। एक अधिकारी ने बताया कि 100 पन्नों की चार्जशीट में अन्य चार गिरफ्तार आरोपियों – बिप्लब सिंह, अफसर अली, सुमन हाजरा और आशीष पांडे के नाम भी शामिल हैं। सीबीआई ने जांच से जुड़े करीब एक हजार पन्नों के दस्तावेज भी जमा किए हैं।

पुतिन की परमाणु धमकियां, जेलेंस्की का पलटवार

मॉस्को (एजेंसी)। रूस और यूक्रेन के बीच जंग लगातार तेज होती जा रही है। रूस ने हाल ही में कई मिसाइल और ड्रोन हमले किए हैं। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन पर 190 ड्रोन और मिसाइल दागने की बात कही है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की ने रूस पर क्लस्टर बमों के इस्तेमाल का भी आरोप

लगाया है। जेलेंस्की ने भी रूस को कड़ा जवाब देने की बात कही है। ऐसे में संघर्ष और तेज होने की आशंका पैदा हो गई है। रणनीतिक मामलों के एक्सपर्ट ब्रह्मा चेलानी और यूक्रेनी विदेश नीति विशेषज्ञ ओल्हा वोरोझबाइट ने रूस-यूक्रेन युद्ध पर बात की है। एक्सपर्ट को लगता है कि नाटो और अमेरिका की सक्रियता इस युद्ध को बढ़ा रही है। पुतिन युद्ध को और बढ़ाने के लिए भी तैयार हैं।

यूके-जर्मनी से मिले 78000 करोड़ के निवेश प्रस्ताव

सीएम बोले- मुझसे कहा गया कि 5वीं फेल हो, उसे जर्मन भाषा सिखा दो, रोजगार दे देंगे

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 6 दिन की यूके और जर्मनी की यात्रा कर शनिवार को भोपाल लौटे। दोनों देशों से एमपी को 78 हजार करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिले हैं। जर्मनी की ओर से 18 हजार करोड़, इसके पहले यूके की ओर से 60 हजार करोड़ के निवेश प्रस्ताव मिल चुके हैं। सीएम ने कहा, आज यूके हो, जर्मनी हो, दोनों देशों को बड़े पैमाने पर हमारे स्किल्ड युवाओं की दरकार है। हमसे तो यहां तक कहा गया कि 5वीं फेल हो, उसे थोड़ी जर्मन भाषा सिखा दो, रोजगार दे देंगे। जर्मनी के अंदर फ्रेंड्स ऑफ एमपी का ग्रुप बनाया है, ऐसा ही ग्रुप हमने इंग्लैंड में भी बनाया है।

जर्मन फार्मास्यूटिकल कंपनी को वहीं से जमीन की मंजूरी : भोपाल में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सीएम ने कहा, च्लंदन में खासतौर पर माइनिंग सेक्टर, हेल्थ, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रिक व्हीकल जैसे सेक्टर में प्रस्ताव मिले हैं। जर्मनी ने हेल्थ और फार्मास्यूटिकल में दिलचस्पी दिखाई है। सिर्फ एक जर्मन फार्मास्यूटिकल कंपनी से ही 3000 करोड़ के निवेश

का प्रस्ताव मिला है। वहां से ही जमीन आवंटन की मंजूरी उन्हें दे दी। सीएम ने बताया, भोपाल के अचारपुरा में जर्मनी की कंपनी 100 करोड़ रुपए निवेश करेगी। जब हम लोग अयस्क की बात कर रहे थे,तब मिस्टर औद्योगिक घराने ने कहा कि हम बड़े स्तर पर निवेश करना चाहते हैं।

7 दिसंबर को नर्मदापुरम में रीजनल कॉन्क्लेवः सीएम ने बताया कि दिसंबर की 7 तारीख को नर्मदापुरम में रीजनल कॉन्क्लेव होने वाली है। अगले महीने में शहडोल में करेंगे और इसके बाद फरवरी में हम ग्लोबल इन्वेस्टर समिट भोपाल में करेंगे। प्रदेश हर काम करने के लायक बने, इसीलिए हमने रीजनल कॉन्क्लेव को संभाग स्तर पर किया है। इसी तरह ग्लोबल स्तर पर हमारी राजधानी का महत्व बढ़ाने के लिए ग्लोबल इन्वेस्टर समिट भोपाल में करेंगे।

अब हमें जर्मनी से आगे निकलना हैः सीएम ने कहा कि जर्मनी और इंग्लैंड से पीएम मोदी का संबंध कैसे जुड़ रहा है, इसका हमें भी आनंद आ रहा है। अर्थव्यवस्था में इंग्लैंड को हम पीछे छोड़कर पांचवें नंबर पर आ गए हैं, व छठवें नंबर पर पहुंच गया है। अब दूसरा जर्मनी हमसे आगे है, अब हम जर्मनी को पीछे कर आगे होंगे।

जर्मनी के संग्रहालय में डायनासोर के जीवाश्म का संबंध एमपी सेः मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार और जर्मनी के शोधकर्ताओं के बीच एक महत्वपूर्ण एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए हैं। एमओयू से सतपुड़ा क्षेत्र में पाए गए ट्राइऐसिक युग के जीवाश्मों पर संयुक्त रूप से शोध किया जा सकेगा। संग्रहालय में एक बेटी ने बताया कि यहां देख रहे डायनासोर के जीवाश्म का संबंध मध्यप्रदेश से है। उसने बताया कि दस वर्ष तक होशंगाबाद, इटारसी, सतपुड़ा रिजर्व के जंगलों में शोध कार्य किया है। धार और मांडू में डायनासोर के अंडे मौजूद हैं।

वे नफरत, हिंसा और बंटवारे की बात करते हैं...

- राहुल गांधी का बीजेपी पर हमला, अडानी को लेकर पीएम मोदी को घेरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सांसद राहुल गांधी के निशाने पर आज फिर देश के मशहूर उद्योगपति गौतम अडानी रहे। राहुल ने अडानी के बहाने पीएम मोदी पर भी निशाना साधा। राहुल ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री गौतम अडानी के साथ अलग व्यवहार करते हैं। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का कहना है कि अडानी के साथ हर दूसरे भारतीय की तुलना में अलग व्यवहार किया जाएगा। राहुल गांधी ने अडानी के बहाने पीएम पर निशाना साधते हुए कहा कि लोकसभा में हम एक राजनीतिक विचारधारा से लड़ रहे हैं। हम भावनाओं, भावनाओं,स्नेह,प्रेम के बारे में बात कर रहे हैं। वे घृणा,क्रोध,विभाजन,हिंसा के बारे में बात करते हैं। संविधान कहता है कि सभी लोगों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी का कहना है कि अडानी के साथ हर दूसरे भारतीय की तुलना में अलग व्यवहार किया जाएगा। राहुल ने आगे कहा कि पीएम मोदी कहते हैं कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अडानी को संयुक्त राज्य अमेरिका में आरोपी बनाया गया है। संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अपराधी कहा गया है। राहुल ने कहा कि भारत में हम उन पर आरोप नहीं लगाएंगे।

एड्स दिवस की पूर्व संध्या पर जागरूकता के लिए CMHO के नेतृत्व में कैंडल मार्च

भोपाल। विश्व एड्स दिवस की पूर्व संध्या पर स्वास्थ्य विभाग जिला भोपाल द्वारा 30 नवंबर को एड्स जागरूकता हेतु कैंडल मार्च निकाला गया । जिला जयप्रकाश चिकित्सालय से प्रारंभ कैंडल मार्च का समापन माननीय उपमुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल के आवास पर हुआ । रैली में एचआईवी संक्रमण के कारणों एवं बचाव के संबंध में जानकारी दी गई । साथ ही एड्स के साथ जी रहे लोगों के प्रति सामाजिक भेदभाव और भ्रांतियों को दूर करने के लिए जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस वर्ष यह दिवस अधिकारों की राह अपनाएं- मेरा स्वास्थ्य , मेरा अधिकार की थीम पर मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर माननीय उपमुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि एड्स एक गंभीर बीमारी है और इस बीमारी के लिए जागरूक होना ही इससे बचाब का सबसे बेहतर तरीका है। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश द्वारा एचआईवी टेस्टिंग की सुविधा शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं में निशुल्क करवाई जा रही है। बीमारी के उपचार का पूरा खर्चा भी शासन द्वारा निशुल्क उठाया जाता है । श्री शुक्ल ने कहा कि इस बीमारी के होने के चार प्रमुख कारणों को जानना और इनसे बचकर इस बीमारी के प्रसार को नियंत्रित कर सकते हैं। एड्स के प्रति जागरूकता के साथ साथ, इसके साथ जी रहे लोगों के प्रति सामाजिक भेदभाव और भ्रांतियों को दूर किया जाना भी जरूरी है।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत लक्ष्य 95-95-95 निर्धारित किया गया है। जिसके तहत वर्ष 2030 तक एचआईवी संभावित लोगों में से 95त्न लोगों को उनकी एचआईवी अवस्था का ज्ञान होना, एचआईवी संक्रमित लोगों में से 95त्न लोगों को एआरटी उपचार सुनिश्चित करना एवं एआरटी उपचार ले

रहे सभी एचआईवी संक्रमितों में से 95 प्रति. लोगों को उनके वायरल लोड का दमन करना निर्धारित किया गया है ।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि संक्रमण से बचाव के लिए यौन संबंधों के दौरान कंडोम का इस्तेमाल करके, केवल लाइसेंस प्राप्त रक्त बैंक से जांच किए गए खून का इस्तेमाल , हर बार नई सिरिंज का इस्तेमाल और गर्भावस्था के दौरान एचआईवी की अनिवार्य रूप से जांच करवाकर इस बीमारी से बचा जा सकता है। साथ में खाना खाने , हाथ या गले मिलने ,खाने के बर्तन, कपड़े ,बिस्तर, शौचालय, टेलीफोन, स्विमिंग पूल के उपयोग , खांसने , छींकने से, मच्छरों के काटने या घरों में पाए जाने वाले कीड़े मकोड़े के काटने इत्यादि से एचआईवी का संक्रमण नहीं फैलता है।

एचआईवी की निशुल्क व गोपनीय जांच एवं परामर्श की सुविधा भोपाल के 9 आईसीटीसी सेंटर में उपलब्ध है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान , गांधी मेडिकल कॉलेज, सुल्तानिया जनाना अस्पताल , जयप्रकाश जिला चिकित्सालय, सिविल अस्पताल बैरागढ़ , सिविल अस्पताल डॉ कैलाशनाथ काटजू, क्षय चिकित्सालय, सिविल बैरसिया और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कोलार में यह जांच करवाई जा सकती है। एचआईवी एड्स की जानकारी के लिए राष्ट्रीय टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 1097 पर कॉल करके भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

कर्नाटक में 'मुस्लिम' आरक्षण पर बुरी फंस गई है कांग्रेस

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में हार के बाद पार्टी पर बढ़ा दबाव

उपचुनाव में वोटों के ध्रुवीकरण से बढ़ गई हैं पार्टी की मुश्किलें

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र और झारखंड में हुए विधानसभा चुनाव के साथ ही 15 राज्यों की 48 विधानसभा और 2 लोकसभा सीटों के नतीजे आ चुके हैं। इन चुनावी नतीजे से कांग्रेस को निश्चित रूप से झटका लगा है। महाराष्ट्र में पार्टी का प्रदर्शन बिल्कुल निराश करने वाला रहा है। इसके साथ ही पार्टी विभिन्न राज्यों में हुए उपचुनाव में भी उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन करने में असफल रही है।

अनुशासन की कमी, गुटबाजी जिम्मेदार- महाराष्ट्र विधानसभा समेत अधिक राज्यों के उपचुनाव में कांग्रेस की रणनीति पूरी तरह फेल नजर आई। वहीं, वोटों के ध्रुवीकरण का भी पार्टी को नुकसान उठाना पड़ा। पार्टी को कोर वोट बैंक भी दलित-पिछड़ा भी इस बार बंटा नजर आए। पार्टी ने हार की समीक्षा के लिए कमेटियों का गठन किया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने हार के लिए पार्टी में अनुशासन की कमी, पुराने ढर्रे की राजनीतिक के साथ ही गुटबाजी को भी जिम्मेदार ठहराया है। इसके साथ ही हार के लिए जवाबदेही तय करने की बात कही है। इस तरह पार्टी हार के बाद पूरी तरह से दबाव में नजर आ रही है। कर्नाटक में मुस्लिम समुदाय सरकार पर 4 फीसदी आरक्षण बहाल करने के लिए दबाव बढ़ा रहा है।

पंजाब-हरियाणा के 321 गांवों से जमीन लेगी सरकार

जालंधर (एजेंसी)। दिल्ली से अमृतसर तक चलने वाली बुलेट ट्रेन के लिए केंद्र सरकार पंजाब और हरियाणा के करीब 321 गांवों से जमीन अधिग्रहण करेगी। अब युद्ध स्तर पर सर्वे शुरू हो गया है। दोनों राज्यों में इस हाई स्पीड रेल लाइन के लिए सर्वे का काम युद्ध स्तर पर चल रहा है। बुलेट ट्रेन दिल्ली से अमृतसर तक का 465 किलोमीटर का सफर महज 2 घंटे में पूरा करेगी। दिल्ली से अमृतसर के बीच यह ट्रेन चंडीगढ़ समेत 15 स्टेशनों पर रुकेगी। इस बुलेट ट्रेन की अधिकतम स्पीड 350 किलोमीटर प्रति घंटा है। इसकी चलने की स्पीड 320 किलोमीटर प्रति घंटा और औसत स्पीड 250 किलोमीटर प्रति घंटा होगी। साथ ही उक्त ट्रेन में एक बार में करीब 750 यात्री सफर कर सकेंगे। दिल्ली, हरियाणा और पंजाब के कुल 343 गांवों से जमीन अधिग्रहण की जाएगी। प्राप्त जानकारी के अनुसार, केंद्र सरकार पंजाब के कुल 186 गांवों की जमीन अधिग्रहण करेगी। जिसमें मोहाली के 39, जालंधर के 49, लुधियाना के 37, अमृतसर के 22, फतेहगढ़ साहिब के 25, कपूरथला के 12 तथा तरनतारन व रूपनगर जिले के एक-एक गांव शामिल हैं।

जो कुछ भी कर सकती हूं, वह करने को तैयार हूं

वायनाड में जीत के बाद बोलीं कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी

मुक्कम में राहुल गांधी के साथ जनसभा को किया संबोधित

तिरुवंतनपुरम (एजेंसी)। केरल से लोकसभा की सदस्य चुनी गई प्रियंका गांधी वायनाड पहुंचने पर खुश दिखाई दीं। उन्होंने कहा कि वह अब वायनाड के लोगों के बेहतर भविष्य के लिए काम करूंगी। वायनाड लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में जीत हासिल करने के बाद दो दिवसीय दौरे पर केरल पहुंचीं है। प्रियंका गांधी ने कहा कि मैं वायनाड के लोगों के बेहतर भविष्य के लिए जो कुछ भी कर सकती हूं, वह करने को तैयार हूं। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि हम वायनाड लैंडस्लाइड पीड़ितों की मदद के लिए केरल सरकार पद दबाव डालेंगे। वायनाड से जीतने के बाद प्रियंका गांधी पहली बार दौरे पर पहुंची हैं। प्रियंका गांधी ने कोझिकोड जिले के थिरुवंबाडी विधानसभा क्षेत्र के मुक्कम में राहुल गांधी के साथ जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आज मुंदक्कई और चूरलमाला में हुए विनाशकारी भूस्खलन को चार महीने हो गए हैं। यह देखना वाकई प्रेरणादायक है कि किस तरह वायनाड एकजुटता के साथ आगे आया है। भारी नुकसान झेलने के बावजूद, वायनाड के लोगों ने उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया है, मजबूती से खड़े रहे, संघर्ष करते रहे और अपने जीवन में आगे बढ़ते रहे।

बर्फीली हवा से ठिठुरा प्रदेश, शिमला-मसूरी से भी ठंडा

भोपाल में 36 साल में सबसे ज्यादा सर्दी, मंडला-शहडोल में 7 डिग्री से नीचे पारा

भोपाल (नप्र)। बर्फीली हवाओं से मध्यप्रदेश ठिठुर गया है। कई शहरों में दिसंबर-जनवरी जैसी ठंड पड़ रही है। भोपाल में नवंबर का महीना 36 साल में सबसे ज्यादा ठंड है। यहां पारा 8.2 डिग्री पहुंच चुका है। वहीं, मंडला और शहडोल में पारा 7 डिग्री के नीचे है। नवंबर के आखिरी दिन भी तेज सर्दी का असर रहने की संभावना है। दिसंबर में कड़ाके की ठंड का दौर रहेगा।

पश्चिम-उत्तर भारत के ऊपर जेट स्ट्रीम 234 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से बह रही है। मध्यप्रदेश के शहरों में यह औसत 8 से 10किमी है। इस वजह से भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर-जबलपुर के साथ ही छोटे शहरों में भी तेज ठंड है। सर्द हवाओं की वजह से लोग कंपकपा उठे। इससे बचने के लिए वे दिनभर गर्म कपड़ें पहने रहे।

हवा नीचे बहेगी तो ठंड और बढ़ेगी- मौसम वैज्ञानिक प्रमेंद्र कुमार ने बताया, अभी जेट स्ट्रीम हवा की ऊंचाई 12.6 किमी है। जब यह नीचे बहेगी, तब ठंड का असर और तेज हो जाएगा। इसके अलावा पूर्वी हिस्से में

एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम और दक्षिण-पश्चिमी बंगाल की खाड़ी के ऊपर डीप डिप्रेशन एक्टिव है। इसका असर भी प्रदेश में देखने को मिल रहा है।

पहली बार भोपाल में पचमढ़ी से भी कम टेम्प्रेचर- नवंबर में पहली बार भोपाल में रात का तापमान पचमढ़ी से भी कम हो गया। गुरुवार-शुक्रवार की रात भोपाल में तापमान 8.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं पचमढ़ी में 9.6 डिग्री रहा। इससे पहले भोपाल में 1988 में पारा 7.5 डिग्री दर्ज किया गया था।

इधर, सबसे ठंडा पूर्वी हिस्से का कल्याणपुर रहा। यहां तापमान 6.2 डिग्री दर्ज किया गया। मंडला में 6.8 डिग्री रहा। बैतूल में 9.4 डिग्री, राजगढ़ में 8 डिग्री, खजुराहो में 9.4 डिग्री, नौगांव में 8 डिग्री, रीवा में 9.5 डिग्री, उमरिया में 7.4 डिग्री और मलाजखंड में 9.5 डिग्री तापमान रहा।

बड़े शहरों की बात करें तो इंदौर में 12.2 डिग्री, जबलपुर में 8.5 डिग्री, ग्वालियर में 10 डिग्री और उज्जैन में 12 डिग्री तापमान दर्ज किया गया।

विजयपुर विधानसभा उप चुनाव में भाजपा की करारी हार के बाद आरोप प्रत्यारोप का दौर जारी

भोपाल (नप्र)। विजयपुर विधानसभा उप चुनाव में भाजपा की करारी हार के बाद आरोप प्रत्यारोप का दौर जारी है। दरअसल भारतीय जनता पार्टी को विश्वास था कि वो उप चुनाव में जीत दर्ज करेगी लेकिन जिस प्रकार से विजयपुर के नतीजे आए उससे भारतीय जनता पार्टी में हैरान और परेशान है। भाजपा में इस बात के चर्चे लगातार हो रहे हैं कि पार्टी विजयपुर कैसे हार गई। यहां तक की सरकार और संगठन में भी इस बात को लेकर चर्चा है कि कमी किसकी तरफ से हुई जिसके कारण विजयपुर का चुनाव भाजपा हार गई। विजयुपर हार के कारण भारतीय जनता पार्टी के नेता ठीक से जवाब भी नहीं दे पा रहे हैं क्योंकि बातें यहां तक निकल कर सामने आ रही हैं कि भारतीय जनता पार्टी के स्थानीय कार्यकर्ता और पदाधिकारियों ने इस चुनाव में मेहनत नहीं की। विजयपुर चुनाव प्रचार में ज्योतिरादित्य सिंधिया भी प्रचार करने नहीं गए थे जिसको लेकर चुनाव प्रचार के दौरान भी लगातार चर्चा हो रही थी। आखिर चुनाव में हार के बाद इस बात का खुलासा हुआ कि पार्टी की तरफ से ही उन्हे जाने के लिए नहीं कहा गया। पत्रकारों से बात करते हुए ज्योतिरादित्य सिंधिया ने खुद कहा कि जिस प्रकार से विजयपुर में हार मिली उसकी उम्मीद नहीं थी लेकिन पार्टी नेतृत्व उन्हे प्रचार करने के लिए कहता तो वो जरुर जाते। ज्योतिरादित्य सिंधिया खुद कह रहे हैं कि उन्हे पार्टी ने प्रचार के लिए भेजा ही नहीं जबकि भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता राजपाल सिंह सिसोदिया का कहना है कि ज्योतिरादित्य सिंधिया चुनाव प्रचार करने गए थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बिटिया मुस्कान को दी बधाई

मध्यप्रदेश की बेटी मुस्कान ने माउंट किलिमंजारो पर फहराया तिरंगा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अशोकनगर की बिटिया मुस्कान रघुवंशी को अफ्रीकी महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी माउंट किलिमंजारो पर विजय प्राप्त करने के लिए बधाई दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बिटिया मुस्कान ने माउंट किलिमंजारो पर तिरंगा ध्वज फहराकर मध्यप्रदेश सहित सम्पूर्ण देश को गौरवान्वित किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बेटी मुस्कान को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं देते हुए उनके सुखद, सफल और उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

कलचुरि समाज नि:शुल्क विवाह सम्मेलन समितियों का गठन

भोपाल। वरिष्ठ नागरिक मंच व एलएनसीटी ग्रुप के संयुक्त तत्वाधान में कलचुरि कलार समाज का तृतीय निःशुल्क सामुहिक विवाह सम्मेलन 10 दिसंबर 2024 को एलएनसीटी विश्वविद्यालय, जेके अस्पताल परिसर, कोलार रोड भोपाल के सभागार में सुबह 9 बजे से आयोजित किया जा रहा है। प्रचार प्रसार समिति के राजेश राय ने बताया कि सम्मेलन की तैयारियों व समन्वय को लेकर विभिन्न समितियों का गठन किया गया है जिसमें संरक्षक व प्रमुख समन्वयक जय नारायण चौकसे, श्रीमती पूनम चौकसे, मुख्य समन्वयक श्रीमती कल्चुरि कल्पना आईडी राय, आवास व्यवस्ता समिति जीसी जायसवाल, बारात चल समारोह समिति- कौशल राय, उपहार समिति- सुशीला चौकसे, विवाह मंडप स्थल व्यवस्था समिति- अमरीश राय, कार्यक्रम स्थल व्यवस्था समिति- आईडी राय, मंच व्यवस्था समिति- डॉ. श्वेता अनुपम चौकसे, वर माला समारोह समिति- कल्पना पप्पू राय, प्रचार प्रसार व्यवस्था समिति- प्रकाश मालवीय, राजेश राय, सुधाकर राउत, दिलिप मालवीय, रुपेश राय, कार्यालय व्यवस्था समिति- वीरेन्द्र पप्पू राय, भोजन व्यवस्था समिति बालमुकुन्द चौकसे, द्वाराचार स्वागत समिति- श्रीमती पूनम जयनारायण चौकसे, अतिथी आमंत्रण- एडवोकेट एमएल राय, राजाराम शिवहरे, दीपक राय, विदाई-उपहार सौंपना समिति- आरके चौकसे सहित करीब 150 कलचुरि कलार समाज के गणमान्य जनों को समितियों की जिम्मेदारियां सौंपी है। गौरतलब है कि सम्मेलन में 11 जोड़ो का निःशुल्क विवाह होना है।

रेलवे ने भोपाल इज्तिमा के लिए की विशेष व्यवस्थाएं

भोपाल। 29 नवंबर से 2 दिसंबर तक आयोजित 'आलमी तबलीगी इज्तिमा' के लिए रेलवे ने यात्रियों और श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु विशेष प्रबंध किए हैं। मंडल रेल प्रबंधक श्री देवाशीष त्रिपाठी के निर्देशन में यह सभी व्यवस्थाएं लागू की गई हैं। संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि यात्रियों को असुविधा से बचाने के लिए नियमित निरीक्षण और निगरानी सुनिश्चित करें।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री सौरभ कटारिया ने बताया कि भोपाल रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के लिए 6 नियमित टिकिट काउंटरों के अतिरिक्त 2 अतिरिक्त टिकिट खिड़कियां शुरू की गई हैं। साथ ही, 6 एटीवीएम मशीनों से टिकिट जारी किए जा रहे हैं। श्रद्धालुओं की भीड़ को व्यवस्थित तरीके से नियंत्रित करने हेतु अतिरिक्त टीटीई स्टाफ की तैनाती की गई है। सुरक्षा के मद्देनजर, जीआरपी, आरपीएफ और अन्य सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं। प्रवेश और निर्गमन द्वारों पर सुरक्षा उपकरणों की व्यवस्था की गई है और सहायता केंद्र स्थापित किए गए हैं। दोनों फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) पर यात्रियों के आवागमन को सुगम बनाने के लिए मार्गों को अलग-अलग विभाजित किया गया है। आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं के लिए चिकित्सा सहायता केंद्र भी उपलब्ध कराया गया है। स्टेशन परिसर और प्लेटफार्मों पर सफाई और प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पश्चिमी सर्कुलेटिंग एरिया में विशेष टेंट लगाए गए हैं, जिनमें बिजली, पानी और सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था की गई है। प्लेटफॉर्म नंबर 6 पर इज्तिमा स्वयंसेवकों के लिए निःशुल्क वाहन पार्किंग की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। गाड़ियों की जानकारी के लिए उद्घोषणा प्रणाली का उपयोग किया जा रहा है।

रेलवे ने दिव्यांगजनों के लिए बढ़ाया सहयोग: समावेशी बैठक में रेलवे की अहम भागीदारी

भोपाल। दिव्यांगजनों को मुख्यधारा से जोड़ने और उनकी सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए भोपाल में 'मध्य प्रदेश स्टेकहोल्डर्स एंगेजमेंट फॉर डेफब्लाइंड इंक्लूजन' बैठक का आयोजन किया गया। यह बैठक दिग्दर्शिका संस्थान में आयोजित हुई, जिसमें कई प्रतिष्ठित हस्तियों और संगठनों ने भाग लिया।

रेलवे का दिव्यांगजनों के प्रति विशेष योगदान- बैठक में डीआरएम कार्यालय भोपाल के दिव्यांग सेल का विशेष रूप से उल्लेख किया गया, जो वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री सौरभ कटारिया के निर्देशन में संचालित है। इस सेल से दिव्यांगजनों को रेलवे टिकट में दिव्यांग रेलवे रियायत प्रमाण पत्र जारी किये जाते है, जिससे उनकी यात्रा आसान और सुगम होती है।

विशेष अतिथियों की भागीदारी- कार्यक्रम में डीआरएम कार्यालय की दिव्यांग सेल पर्यवेक्षक डॉक्टर ज्योति तिवारी और डॉक्टर प्रदीप मालवीय, समावेशी शिक्षा समन्वयक, भोपाल ने प्रमुख भूमिका निभाई। इसके अलावा दिग्दर्शिका पुनर्वास एवं अनुसंधान केंद्र की संचालक श्रीमती उषा उपाध्याय, सेंस इंटरनेशनल इंडिया के श्री पराग नामदेव (नेटवर्क प्रमुख) और सुश्री स्तुतिलता सिंह (वरिष्ठ नेटवर्क विशेषज्ञ) ने भी अपने विचार साझा किए।

प्राचीन बौद्ध महोत्सव में पांच देशों से आए बौद्ध धर्मी

सांची में तलघर से निकाली गई अस्थियां, श्रीलंका से आए छात्रों ने किया पूजा नृत्य

दो दिवसीय सांची महोत्सव हुआ प्रारंभ

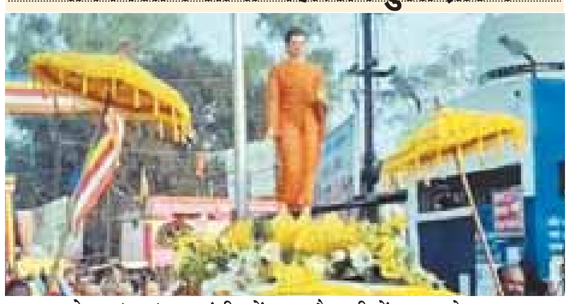

रायसेन (नप्र)। सांची में शनिवार से 72वें दो दिवसीय महाबोधि महोत्सव का आगाज हो गया है। सबसे पहले सुबह 8 बजे महाबोधि सोसाइटी से शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा 9 बजे चैत्यगिरी बिहार मंदिर पहुंची। यात्रा में वियतनाम, श्रीलंका, जापान, सिंगापुर, अमेरिका से आए बौद्ध धर्म को मानने वाले अनुयायी शामिल हुए। महोत्सव में मध्यप्रदेश के मंत्री प्रहलाद पटेल भी शामिल हुए।

चैत्यगिरी बिहार मंदिर में सुबह 9 बजे तलघर में से जिला प्रशासन के अधिकारी और महाबोधि सोसाइटी के पदाधिकारी की मौजूदगी में ताला खोलकर भगवान गौतम बुद्ध के परम शिष्य सारीपुत्र और महामोदग्लायन की पवित्र अस्थियां निकाली गई। उनकी विशेष पूजा अर्चना की गई। पूजा अर्चना के दौरान देश-विदेश के बौद्ध धर्म के श्रद्धालु मौजूद रहे।

कार्यक्रम में शामिल हुए विद्वानों ने भगवान बुद्ध के शांति के संदेश को जीवन में आत्मसात किए जाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के चीफ, लंकाजी टेंपल जापान के मुख्य संघ नायक पूज्य बानगल उपतिस्स नायक थेरो और वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी अनुराधा शंकर भी मौजूद रहीं।

यह पवित्र दिन जब भारत सहित कई देशों के लोग सांची आते हैं-प्रहलाद पटेल

विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सांची के चैत्यगिरी विहार मंदिर में दो दिवसीय महाबोधि महोत्सव का शुभारंभ शनिवार को हुआ। इस अवसर पर प्रदेश के ग्रामीण विकास एवं पंचायत मंत्री प्रहलाद पटेल ने कहा कि जब मैं देश का संस्कृति मंत्री था तब मुझे पहली बार थेरो जी के सानिध्य में इस कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिला था। यह मेला नहीं है ये पवित्र दिन है जिस दिन न केवल भारत बल्कि भारत से बाहर के लोग यहां आकर पवित्र अस्थि कलश के दर्शन करते हैं। मंत्री श्री पटेल महाबोधि महोत्सव के पहले दिन पवित्र अस्थि कलश के दर्शन करने के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर संस्थापक, महासचिव बोधि गयाविज्जालय 980 संस्थान, भारत डॉ. सुपाचाई वेरापुचोंग शामिल हुए इस मौके पर उनके साथ श्रीलंका महाबोधि सोसाइटी के प्रेसिडेंट बानगल उपतिस्स नायक थेरो भी मौजूद रहे।

ट्यूटर के पति ने बच्ची को बैड टच किया

भोपाल में छठवीं की छात्रा रोते हुए बोली-अंकल अकेले में मेरे पार्ट्स छूते हैं

भोपाल (नप्र)। भोपाल में छठवीं की छात्रा के साथ बैड टच का मामला सामने आया है। वारदात को कोचिंग टीचर के पति ने अंजाम दिया है। बच्ची के मुताबिक, पत्नी की गैर मौजूदगी में आरोपी उसके साथ अक्सर अश्लील हरकतें करता था। मामला अवधपुरी इलाके का है। शुक्रवार को बच्ची ने कोचिंग जाने से इनकार किया तो मां ने पूछताछ की। इसके बाद बच्ची ने आरोपी की करतूत का खुलासा किया। बच्ची के परिजन उसे लेकर थाने पहुंचे और केस दर्ज कराया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

टीआई रतन सिंह परिहार ने बताया कि 11 वर्षीय पीड़िता प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई करती है। घर के करीब ही एक महिला के पास ट्यूशन पढ़ने जाती है। बीते दो महीने से आरोपी नितिन देशमुख (55) पत्नी के यहां-वहां होते ही बच्ची के साथ गंदी हरकतें करता था।

गुरुवार को ट्यूशन पढ़ाने के दौरान टीचर पड़ोस में गई थी। अकेलेपन का फायदा उठाकर आरोपी ने बच्ची के साथ अश्लील हरकतें की। वह बच्ची के प्राइवेट पार्ट्स से छेड़खानी करने लगा।

मासूम बोली- अंकल गंदी हरकत करते हैं- शुक्रवार को कोचिंग का समय हुआ तो पीड़िता ने जाने से इनकार कर दिया। मां ने वजह पूछी तो बच्ची रोने लगी। उसने मां से कहा- टीचर की गैर मौजूदगी में नितिन अंकल बैड टच करते हैं। उसने गुरुवार को आरोपी द्वारा की गई हरकत की पूरी जानकारी मां को दी। मां ने पिता को बताया। इसके बाद दंपती बच्ची को लेकर थाने पहुंचे। जहां काउंसिलिंग के बाद आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया गया।

पुलिस पर रौब झाड़ा, अधिकारियों के नाम लिए- पुलिस आरोपी नितिन देशमुख के घर पहुंची तो वह रौब झाड़ने लगा। खुद को अखबार का संपादक बताया। कई अधिकारियों के नाम ले डाले। जब उससे पत्रकार होने के प्रमाण मांगे गए तो एक कार्ड दिखाया। एक अखबार का यह कार्ड दो साल पहले ही एक्सपायर हो चुका था।

3 वर्षीय बालिका संदिग्ध परिस्थिति में लापता, परिजनों ने पड़ोसी पर जताया संदेह

देहात थाना क्षेत्र का मामला, पीड़ित परिवार ने एसपी से लगाई न्याय की गुहार

भिंड। घर वालों को गहरी नींद में सोता छोड़कर 13 वर्षीय बालिका संदिग्ध परिस्थिति में घर से गायब हो गई। घटना देहात थाना इलाके की है, जिसमें परिजनों ने पड़ोसी पर उनकी बिटिया को भगाकर ले जाने का संदेह जताया है। हालांकि पुलिस द्वारा अज्ञात आरोपी के खिलाफ अपहरण की एफआईआर दर्ज की गई है, जिससे पीड़ित परिवार ने एसपी से न्याय की गुहार लगाई है।देहात थाना क्षेत्रांतर्गत ग्राम कटना का पुरा निवासी मंशाराम कुशवाह की 13 वर्षीय बिटिया बीती 13-14 नवंबर की दरम्यानी रात घर वालों को सोता हुआ छोड़कर अचानक गायब हो गई। सुबह जब परिजन जागे, तो बिटिया के नजर नहीं आने पर उसकी खोजबीन शुरू की, लेकिन आस-पड़ोस सहित हर परिचित व रिश्तेदार के यहां पता करने के बावजूद उसका कोई सुराग नहीं लगा, तो थाने पहुंचकर इसकी सूचना दी। चूंकि मामला नाबालिग से जुड़ा था, जिससे पुलिस द्वारा नियमानुसार अज्ञात आरोपी के खिलाफ अपहरण की एफआईआर दर्ज कर ली गई।

पुलिस नहीं कर रही नामजद रिपोर्ट

फरियादी ने एसपी डॉ. असित यादव को शिकायती आवेदन देकर कहा है, कि पड़ोसी ही उसकी बिटिया को भगाकर ले गया है। चूंकि वह आपराधिक प्रवृत्ति का है, जो उनकी बिटिया के साथ कोई भी अनहोनी घटित कर सकता है। वहीं देहात थाना पुलिस द्वारा नामजद आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट नहीं की जा रही है। फरियादी ने पुलिस कप्तान से बिटिया को वापस लाने तथा आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करने की गुहार लगाई है।

पड़ोसी ने दी वीडियो वायरल करने की धमकी

पुलिस व परिजन लापता बालिका की तलाश में जुटे हुए थे, इसी बीच किसी ने बच्ची के पिता को बताया कि उनकी बेटी को पड़ोस में रहने वाले राघवेंद्र सिंह पुत्र हरगोविंद कुशवाह के साथ देखा गया था। इस पर वह पड़ोसी के घर पहुंचकर अपनी बिटिया के बारे में पूछने लगा, तो राघवेंद्र का पिता कहने लगा, कि मेरा बेटा अब तेरी लड़की के साथ शादी करेगा और तेरी बिटिया अब कभी वापस नहीं आएगी। फरियादी के मुताबिक हरगोविंद ने उसे धमकी दी है, कि अगर उसने कहीं भी शिकायत की, तो उन्होंने उसकी बिटिया का अश्लील वीडियो बना लिया है, उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर उसे बदनाम कर देंगे।

भोपाल में लगे वक्फ बोर्ड हटाओ भारत बचाओ के बैनर

सीसीटीवी फुटेज जुटाने में लगी पुलिस; पोस्टर में किसी व्यक्ति-संस्था का नाम नहीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल में मिंटो हॉल के बाहर शनिवार को वक्फ बोर्ड हटाओ भारत बचाओ के पोस्टर लगाए गए। मिंटो हॉल के बाहर लगाए गए पोस्टर पर किसी व्यक्ति या संस्था का नाम नहीं लिखा है।

फिलहाल, पोस्टर किसने लगाए इसका खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस ने बैनर पर संज्ञान लेते हुए जांच शुरू कर दी है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज को खंगाला जा रहा है।शनिवार को राजधानी के मिंटो हॉल के बाहर इस तरह के पोस्टर लगाए गए हैं। अरेरा हिल्स थाना टीआई मनोज पटवा ने बताया कि, शनिवार दोपहर पोस्टर लगे होने की जानकारी मिली। पोस्टर किसने लगाए यह पता लगाने आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

मामले की जांच शुरू कर दी है। पोस्टर लगाने वालों की पहचान होने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। थाने की दो टीमें आसपास लगे कैमरों के फुटेज खंगालने में जुट गई है।

मौलाना उमर मनि ने कहा-नेकी के रास्ते पर चलें

भोपाल में आलमी तब्लीगी इज्तिमा का दूसरा दिन;मौलाना यूसुफ ने बताया न ब्याज लें और न दें

भोपाल (नप्र)। आलमी तब्लीगी इज्तिमा के दूसरे दिन की शुरुआत फजिर की नमाज के बाद मेवात से आए मौलाना उमर मनि के बयान के साथ हुई। उन्होंने लोगों से नेकी के रास्ते पर चलने का कहा। इसके अलावा एक-दूसरे से भलाई के साथ सुलूक पर भी जोर दिया।

जोहर के बाद दिल्ली से आए मौलाना यूसुफ की तकरीर हुई। उन्होंने कहा कि न ब्याज से रुपए लें और ना

ही दें। अल्लाह पर यकीन रखा जाए तो हर रास्ता आसान हो सकता है। बड़े-बड़े लश्कर सहाबियों के सामने कई बार छोटे साबित हुए हैं, इसलिए हम यकीन से ही अपनी आखरत को बेहतर बना सकते हैं। शनिवार को करीब 5 लाख से अधिक लोग यहां पहुंचे हैं एक अनुमान के मुताबिक रविवार को इज्तिमा गाह में लाखों की तादाद में लोग पहुंचेंगे। यह संख्या करीब 7 से 8 लाख तक पहुंच सकती है।

न्यूमार्केट व्यापार संरक्षण समिति ने विधायक से की मुलाकात

सबनानी को ज्ञापन सौंपकर किया चौराहा सौंदर्यीकरण का अनुरोध

भोपाल (नप्र)। न्यू मार्केट व्यापार संरक्षण समिति ने गणेश चौक (एसबीआई मुख्य ब्रांच के सामने) में विकास कार्यों और सौंदर्यीकरण की मांग को लेकर भोपाल दक्षिण पश्चिम के विधायक भगवान दास सबनानी से मुलाकात की और एक अनुरोध-ज्ञापन सौंपा। जिसमें समिति ने बताया कि न्यूमार्केट वार्ड 32, जोन 21 के इस प्रमुख चौराहे पर वर्तमान में कोई प्रवेश गेट नहीं है, जिससे आपातकालीन सेवाओं जैसे फायर ब्रिगेड और एम्बुलेंस का आवागमन कठिन हो जाता है। इस समस्या के समाधान के लिए समिति ने विधायक से आग्रह किया कि चौराहे के केंद्र से 15 फीट का आधुनिक ऑटोमैटिक बोलार्ड गेट शीघ्र स्थापित किया जाए।

समिति ने चौराहे के अन्य विकास कार्यों की भी मांग की, जिसमें पिंक पार्किंग, पिक एंड ड्रॉप पॉइंट, हाई डेफिनिशन सीसीटीवी कैमरे, आधुनिक सुसज्जित प्रवेश द्वार, सूचना प्रसारण के लिए एलईडी स्क्रीन, इको-फ्रेंडली एलईडी लाइट्स और रेस्टिंग चेयर्स शामिल हैं। इन सुविधाओं से न्यू मार्केट को एक स्वच्छ, सुव्यवस्थित और आधुनिक व्यापारिक क्षेत्र में बदलने का उद्देश्य है।

सबनानी ने समिति की मांगों पर सहमति जताते हुए अपनी विधायक निधि से सभी कार्यों को शीघ्र पूरा कराने का आश्वासन दिया। उन्होंने अपने स्टाफ को प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश भी दिए।

इस अवसर पर न्यूमार्केट व्यापार संरक्षण समिति के सदस्य सतीश गंगराड़े, पवन वरदानी, अजय देवनानी, प्रदीप कुमार गुप्ता, भाजपा नेता राजू अनेजा, पलाश गर्ग, सुरेश आवतानी, प्रदीप जैन, अमित जैन, राजेश जैन, टीटू भाई, सनी मखीजा, शुभ जैन, हरीश ठाकुर समेत बड़ी संख्या में न्यूमार्केट के व्यापारी उपस्थित थे।

बिल्डर का प्लाट बेचकर भरेंगे 1.32 करोड़ का बिजली बिल

भोपाल की 2 बड़ी कॉलोनियों में नहीं कटेंगे कनेक्शन, सब स्टेशन भी बनेगा

भोपाल (नप्र)। भोपाल की न्यू जेल रोड स्थित दो बड़ी कॉलोनियों- द्वारकाधाम और गोकुल धाम में अब बिजली कनेक्शन नहीं कटेंगे। इससे 700 से ज्यादा परिवारों की रात अंधेरे में नहीं बीतेगी। मंत्री विश्वास सारंग की मौजूदगी में फैसला हुआ है कि कॉलोनी में बिल्डर का प्लाट बेचकर 1.32 करोड़ रुपए का बिजली का बिल भरा जाएगा। कॉलोनी में बिजली का सब स्टेशन भी बनेगा। बिल बकाया होने की वजह से बिजली कंपनी दोनों ही कॉलोनियों के कनेक्शन काट देती है। 2 महीने में दो बार ऐसा हो चुका है। 14 नवंबर को भी कनेक्शन कट जाने से लगातार 25 घंटे तक बिजली गुल रहेगी। इस पर रहवासी सीएम हाउस तक पहुंच गए थे। वहीं, मामले में मंत्री सारंग को भी दखल देना पड़ा। आखिरकार अब बिजली बिल को लेकर फैसला हो गया है।रहवासियों ने मंत्री विश्वास सारंग से भी शिकायत की थी। इसके बाद बिजली बिल भरने को लेकर फैसला लिया गया।

7 करोड़ रुपए से डेवलपमेंट भी कराएंगे- कॉलोनी में बिजली के मुद्दे पर मंत्री सारंग ने बैठक ली। जिसमें कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह, बिजली कंपनी के अफसर भी मौजूद थे। निर्णय हुआ कि बिल्डर का जो 21 हजार वर्ग फीट का कॉमर्शियल भूखंड नगर निगम के पास बंधक है, उसे बेचकर बिल भर दिया जाए। वहीं, जिन रहवासियों द्वारा बिजली बिल जमा नहीं किए हैं, वे पांच किस्तों में बिल भरेंगे। पहली किस्त 15 दिसंबर को जमा की जाएगी। वहीं कॉलोनी में करीब सात करोड़ रुपए से विकास कार्य भी कराए जाएंगे।

रात में गांधीनगर थाने पहुंचे, शिकायत की 14 नवंबर की रात रहवासी बिल्डर पर केस दर्ज कराने के लिए गांधीनगर थाने पहुंच गए थे।

विचार

आतिफ़ रब्बानी
लेखक भीमराव आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय मुज़फ़्फ़रपुर में अर्थशास्त्र के सहायक प्राध्यापक हैं।

कुछ न करना भी मगर इक काम है

काम न करने से जीवन समाप्त नहीं हो जाता। लेकिन इतना तो ज़रूर है कि कार्य की अधिकता इंसान को परेशानी में डाल सकती है। कई गंभीर शारीरिक और मानसिक बीमारियां गले पड़ सकती हैं। यहां तक कि इंसान मौत के मुंह में समा सकता है। जापान के लोग बहुत कर्त्तव्यनिष्ठ होते हैं। अत्यधिक काम करने के लती। जिन्हें पूंजीवादी शब्दावली में 'वर्कहालिक' कहा जाता है। कई बार काम के बोझ और इससे उपजी जटिलताओं के कारण 'वर्कहालिक' असमय काल के ग्रास में समा जाते हैं। जापानी भाषा में इसको 'करौशी' कहते है। करौशी जापान की सामाजिक समस्या बन गई है। अब यह एक वबा की शक्ल अख़्तियार कर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डबल्यू.एच.ओ.) और अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आई.एल.ओ.) के एक संयुक्त अध्ययन में पाया गया कि विश्व की 9 प्रतिशत आबादी, काम के बोझ की वजह से, करौशी की ज़द में आ सकती है। हफ़्ते में 55 घंटे से अधिक काम करने का नतीजा गंभीर हो सकता है - करौशी को आमंत्रण देने जैसा।

'एल डॉलचे फार निएनते' इतालवी भाषा का एक प्रसिद्ध कथन है। इसका मतलब होता है - कुछ न करने का सुखद-आनंद। ज़ाहिर है कुछ न करने में जो मज़ा है वह किसी चीज़ में नहीं! ख़ाली बैठे रहने की मौज का कोई मुक़ाबला नहीं! हम भारतीय–ख़ास तौर पर उत्तर-भारतीय–कुछ भी न करने को अपनी शान समझते हैं। मलूकदास ने, अपने मशहूर दोहे से, कुछ न करने की प्रवृति को दार्शनिक तर्क दिया। वहीं, राहत इंदौरी कुछ न करके भी ग़ज़ब ढाते हैं-

काम सब ग़ैर-ज़रूरी हैं जो सब करते हैं
और हम कुछ नहीं करते हैं ग़ज़ब करते हैं।

काम न करने से जीवन समाप्त नहीं हो जाता। लेकिन इतना तो ज़रूर है कि कार्य की अधिकता इंसान को परेशानी में डाल सकती है। कई गंभीर शारीरिक और मानसिक बीमारियां गले पड़ सकती हैं। यहां तक कि इंसान मौत के मुंह में समा सकता है। जापान के लोग बहुत कर्त्तव्यनिष्ठ होते हैं। अत्यधिक काम करने के लती। जिन्हें पूंजीवादी शब्दावली में 'वर्कहालिक' कहा जाता है। कई बार काम के बोझ और इससे उपजी जटिलताओं के कारण 'वर्कहालिक' असमय काल के ग्रास में समा जाते हैं। जापानी भाषा में इसको 'करौशी' कहते है। करौशी जापान की सामाजिक समस्या बन गई है। अब यह एक वबा की शक्ल अख़्तियार कर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डबल्यू.एच.ओ.) और अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आई.एल.ओ.) के एक संयुक्त अध्ययन में पाया गया कि विश्व की 9 प्रतिशत आबादी, काम के बोझ की वजह से, करौशी की ज़द में आ सकती है। हफ़्ते में 55 घंटे से अधिक काम करने का नतीजा गंभीर हो सकता है । करौशी को आमंत्रण देने जैसा।

बीते जुलाई माह में अकाउंटिंग कन्सल्टैनसी कंपनी अर्न्स्ट एंड यंग इंडिया में कार्यरत एक महिला चार्टेड अकाउन्टैंट की असामयिक मृत्यु हो गई। अकाउन्टैंट की अचानक मौत के बाद उनकी मां ने कंपनी को एक खुला पत्र लिखा था और वर्क लोड का आरोप लगाया था। पत्र में कंपनी के वर्क कल्चर की आलोचना की थी और कहा था कि उनकी बेटी पर काम का बोझ इस हद तक था कि उसे सोने के लिए भी मुश्किल से समय मिलता था। वह देर रात तक काम करती थी। वीकेंड में भी 'लॉग-इन' करती थी, उसे अतिरिक्त कार्य सौंपे जाते थे।

कभी-कभी समस्याओं में कुछ न करना भी समाधान होता है! अर्थमिति (इकोनॉमिट्रिक्स) का विद्यार्थी इससे भली-भांति परिचित होता है। बहुप्रतिगमन विश्लेषण (मल्टीपल रिग्रेशन एनालिसिस) में बहुसंरेखता (मल्टीकोलिनरिटी) की समस्या आती है, जिसके समाधान के लिए अर्थमितिज्ञ सुझाते हैं - 'डू नथिंग' यानी कुछ मत करिए!

नादान लोग कुछ न करने को निकम्मेपन का समानार्थी क़रार देते हैं। निकम्मापन आंतरिक और वाह्य वातारण पर निर्भर करता है। निकम्मापन किसी क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। चचा ग़ालिब तो निकम्मेपन को इश्क़ का हासिल बताते हैं।

इश्क़ ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया
वर्ना हम भी आदमी थे काम के।

वहीं, कुछ न करना इंसान के अंदर की आवाज़ है। निकम्मापन बेफ़ैज़ हुआ करता है, जबकि कुछ न करना बहुत कुछ कर जाता है। टेलीविश्ज़न पर कैडबरी चॉकलेट का एक विज्ञापन आता है। ऐड्वर्ट यूँ होता यह है - एक बूढ़ी औरत एक बालकनी के नीचे सीट पर बैठी है। पास में लड़का खड़ा है। उसको छड़ी गिर का दूर चली जाती है। बूढ़ी लड़के से छड़ी उठाने को कहती है। लड़का उठाने को सखर लेता है लेकिन वह चॉकलेट खाने में मसरूफ़ रहता है, छड़ी नहीं उठाता। तब बूढ़ी मजबूर होकर छड़ी उठाने ख़ुद उठती है। इतने में ऊपर से बालकनी टूट कर गिर जाती। बुढ़िया कहती है 'थैंक यू बेटा! अच्छा हुआ तू ने कुछ नहीं किया'। सोचिए, अगर लड़का कुछ करता तो यक़ीनन बूढ़ी के लिए मुज़िर होता, जानलेवा साबित होता। बक़ौल अकबर इलाहाबादी-

ग़फ़लत की हँसी से आह भरना अच्छा
अफ़आले-मुज़िर से कुछ न करना अच्छा।

बज़ाहिर कुछ न करने वाला भी बड़ा काम अंजाम दे देता है। फ्रेडरिक ऑगस्ट केकुले, कुछ न करके, सो रहे थे। भरी नींद में सपना आया और बेंजीन संरचना की खोज कर डाली! न्यूटन भी कुछ न करके बस बाग़ में आराम फ़रमा रहे थे, सर पर सेब गिरा और दुनिया गुरुत्वाकर्षण के नियम से परिचित हुई। काम की आपाधापी के बीच अपने लिए समय निकालना अंततः आपकी कार्य क्षमता को ही बढ़ाती है।

प्रसिद्ध लेखक और प्रौद्योगिकी पूर्वानुमानकर्ता एलेक्स सूजंग-किम पैंग की एक दिलचस्प किताब है 'रेस्ट ÷ व्हाई यू गेट मोर डन व्हेन यू वर्क लेस'। इस पुस्तक में पैंग कहते हैं कि आराम करने और अपने लिए समय निकालना उत्पादकता और रचनात्मकता के लिए अतिआवश्यक है। उनका कहना है कि व्यक्ति को 'डिलिबरेट रेस्ट' यानी जानबूझकर आराम या जानबूझकर 'कुछ न करने के लिए' समय निकालना चाहिए।

काम के बोझ के तले दबे रहकर, देर तक लगातार कई-कई घंटे काम करने से व्यक्ति शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक रूप से टूट जाता है। अपने आपको कुछ समय के ख़ाली छोड़ देना, कुछ न करना और सिर्फ़ आराम करना आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है। अमेरिकन जर्नल ऑफ़ एपिडीमीआलजी में प्रकाशित एलैन ईकर के बीस वर्ष के दीर्घकालीन शोध के अनुसार ऐसे लोग जो नियमित तौर पर आराम करते और सालाना छुट्टियाँ लेते हैं उनके हृदय की सेहत बेहतर होती है, वे बेहतर ज़िंदगी गुजारते है बनिस्बत उनके जो खुद को दफ़्तर में व्यस्त रखते हैं। छुट्टियाँ और विश्राम नए विचारों के लिए एक इनक्यूबेटर भी हो सकते हैं।

तो भाई! क़िस्सा कोताह यह कि थोड़े समय के लिए कुछ न करना और अपने आप को समय देना भी एक कला है। इस्माइल मेरठी ने कहा ही है

कुछ न करना भी मगर इक काम है
गर नहीं सोहबत तो उज़्लत ही सही।

कविता

पुरानी दीवारें

विवेक कुमार मिश्र

दीवार, बहुत पुरानी दीवार
जो पुरानी होकर और ज्यादा चमक उठती थी
पुरानी इतनी कि मिट्टी से उठी थी
और अपने भीतर पत्थरों को समेटे थी
पत्थर भी अनगढ़ से...
और मिट्टी तो मिट्टी ही है
अपने हिसाब से उठती है
और आकार ले लेती है
पुरानी दीवारें कहती हैं कि
हमारी आयु न देखें
यह सोचें कि हम अब भी कुछ कर रहे हैं
इस तरह बिना कहे हम सब
अपने अस्तित्व को घोषित करते रहते हैं
अस्तित्व को घोषित करने के लिए
कुछ ज्यादा नहीं सोचना होता
बस एक दिन अपने को घोषित करते हुए
ऐसे आ जाते हैं कि वहीं हैं और कोई नहीं
पर पुरानी दीवारें न जाने कितनी बातें
संभाल कर रखती हैं कि
बस परत दर परत उठाते रहिए
और नये से नये संदर्भ मिलते जायेंगे
हर एक पुरानी दीवार
जिसपर समय अपनी कहानी
कहता चलता है
उसे उलट पलट कर देखों
एक ही आदमी किसी पुरानी दीवार
पर टंगा नहीं होता
पुरानी दीवारें
आदमी के इतिहास को लेकर आती हैं
दीवार पुरानी थी
इसलिए अपने इतिहास को प्रकट कर रही थी
नई दीवार का क्या
अभी तो यहां कुछ शुरु होगा
फिर यहां से इतिहास को कैसे बांचा जाएं
भला कोई कहीं भी चलें जाएं
इतिहास के लिए, आदमियों के पाठ के लिए
पुरानी दीवारों के पास जाना ही होगा
पुराने आदमी भले ही न मिले
पर पुरानी दीवारें आदमी की गाथा को
बिना किसी घोषणा के प्रस्तुत करती रहती हैं ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पुस्तक समीक्षा- भीगते सावन

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
समीक्षक

परंपरा, समाज और संवेदनाओं का अद्भुत ताना-बाना

सुरेश सौरभ वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार हैं, जिनकी लेखनी में मानवीय संवेदनाओं, समाज के ज्वलंत मुद्दों, और पारंपरिक मूल्यों का सजीव चित्रण मिलता है। उनकी कहानियाँ यथार्थ और संवेदनाओं के गहरे मेल को दर्शाती हैं। सुरेश सौरभ का नवीनतम कहानी संग्रह ÷भीगते सावन÷ साहित्यिक क्षेत्र में एक उल्लेखनीय योगदान है, जो 11 कहानियों का एक ऐसा संग्रह है, जिसमें मानवीय संवेदनाओं, जीवन के विभिन्न पहलुओं और समाज के ज्वलंत मुद्दों का अत्यंत सजीव व सशक्त चित्रण किया गया है। यह पुस्तक पाठकों को एक ही बैठक में पढ़ने के लिए प्रेरित करती है और प्रत्येक कहानी की विविधता के कारण पाठकों को बांधे रखने में सफल होती है। इसमें संकलित कहानियाँ अलग-अलग मुद्दों, परंपराओं और भावनाओं का एक ऐसा मिश्रण प्रस्तुत करती हैं, जो साहित्य प्रेमियों के लिए एक नया अनुभव प्रदान करता है।

संग्रह की पहली कहानी 'एक था ठठेरा' पुरानी परंपराओं और लुप्त हो रही सांस्कृतिक धरोहर को संजोने का प्रयास करती है। ठठेरा के पारंपरिक कार्य और जीवनशैली को केंद्र में रखते हुए, इस कहानी के माध्यम से लेखक ने एक खोते हुए पेशे और उसकी विरासत को संवेदनशीलता से उभारा है। यह कहानी न केवल पुरानी परंपराओं को जीवंत करती है बल्कि आधुनिक समाज के बदलाव और नई पीढ़ी के इस धरोहर के प्रति उदासीनता को भी दर्शाती है।

'भीगते सावन' संग्रह की शीर्षक कथा है, जो युवाओं की भावनाओं और संबंधों की गहराइयों को दर्शाती है। इस कहानी में एक युवती के जीवन का एक यादगार क्षण और उसके युवा मित्र के दृढ़ चरित्र को दर्शाया गया है। इस कथा में बारिश का प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग किया गया है, जो जीवन की कठिनाइयों और भावनाओं की धारा को दर्शाता है। इस कहानी का अंत पाठकों को यह सोचने पर विवश कर देता है कि सच्चे संबंधों में कितनी सुदृढ़ता और संजीदगी होनी चाहिए।

'विश्वास लौट आया' कहानी में एक आईएएस अफसर का आंतरिक संघर्ष और सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण अपने पिता के प्रति उसके बदलते व्यवहार का वर्णन किया गया है। कहानी में गरीबी और अमीरी के अंतर के कारण उत्पन्न दूरी को दर्शाया गया है। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि जीवन में परिवार और मानवीय मूल्यों का महत्व किसी भी सामाजिक प्रतिष्ठा या भौतिक संपत्ति से अधिक होता है। जिस तरह से कहानी में एक आईएएस अधिकारी अपनी गलती का अहसास करता है और अपने पिता को वृद्धाश्रम से घर ले आता है, वह हर पाठक के मन में गहरी छाप छोड़ता है।

'प्रकाश चला गया' भ्रष्ट व्यवस्था और समाज में व्याप्त अव्यवस्था को उजागर करती है। इसमें एक छोटी सी घटना बढ़ते-बढ़ते इतना भयानक रूप ले लेती है कि परिवार के बड़े बेटे प्रकाश को आत्महत्या जैसा घातक कदम उठाना पड़ता है। मात्र एक थप्पड़ का एक भयानक घटना में तब्दील होने को पाठक धीरे-धीरे अपने अंदर महसूस करता रहता है।

'औलाद के आँसू' वृद्ध माता-पिता की दुर्दशा और उनके प्रति औलाद की निष्ठुरता को उभारती है। आधुनिक समाज में बच्चों की व्यस्त जीवनशैली और अपने माता-पिता के प्रति लापरवाही का यह एक सजीव चित्रण है। कहानी का उद्देश्य समाज को यह संदेश देना है कि माता-पिता की सेवा और देखभाल करना, हर संतान का कर्तव्य है और उन्हें उपेक्षित करना एक गंभीर त्रुटि है।

कहानी 'आतंकी' एक और गंभीर मुद्दे पर आधारित है, जो आतंकवाद और समाज पर उसके प्रभाव को दर्शाती है। इस कहानी में लेखक ने आतंकवाद के कारण परिवारों में आने वाली तबाही और पीड़ा को बेहद सजीवता से चित्रित किया है। कहानी के पात्रों के माध्यम से सुरेश सौरभ ने उन निर्दोष लोगों की पीड़ा को उजागर किया है, जो इस अंधे संघर्ष का शिकार बनते हैं।

सुरेश सौरभ का लेखन शैली में गहराई और भावनाओं का प्रभावी चित्रण उनके साहित्यिक कौशल को दर्शाता है। उनकी भाषा सरल, स्पष्ट और संप्रेषणीय है, जो आम पाठक के मन को सहजता से छू लेती है। प्रत्येक कहानी का विषय अत्यंत विविध है, जो पाठकों को एकरसता से दूर रखता है। सुरेश सौरभ के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने पात्रों के माध्यम से समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर संवेदनशीलता और गंभीरता के साथ प्रकाश डालते हैं।

'भीगते सावन' कहानी संग्रह का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सुरेश सौरभ ने अपनी कहानियों में न केवल मानवीय रिश्तों की जटिलताओं को उभारा है, बल्कि समाज में व्याप्त समस्याओं को भी गहरी नजर से देखा है। उनका लेखन यह सिद्ध करता है कि वे केवल मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से लेखनी चलाते हैं। उनका यह संग्रह इस बात का प्रमाण है कि वे साहित्य को एक सार्थक और जागरूकता उत्पन्न करने वाले माध्यम के रूप में देख रहे हैं।

इस संग्रह की कहानियाँ न केवल मनोरंजक हैं, बल्कि समाज को आत्मनिरीक्षण करने का अवसर भी प्रदान करती हैं। संग्रह में जहाँ एक ओर 'रैली' और 'पटाक्षेप' जैसी कहानियाँ गंभीर मुद्दों को उठाती हैं, वहीं दूसरी ओर 'भीगते सावन' और 'आखिरी खत' जैसी कहानियाँ भावनात्मक संबंधों और आत्मीयता को भी उभारती हैं।

सुरेश सौरभ जी का यह कहानी संग्रह निस्संदेह हिंदी साहित्य जगत में एक सशक्त और प्रेरणादायी स्थान रखता है। उनकी लेखनी में गहराई, संवेदनशीलता और सामाजिक जागरूकता का अद्भुत मिश्रण है, जो पाठकों को प्रभावित करता है। 'भीगते सावन' की कहानियाँ हमें यह अहसास दिलाती हैं कि सुरेश सौरभ जैसे युवा लेखक साहित्य को समाज के प्रति एक जिम्मेदारी के रूप में देख रहे हैं। इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज में जागरूकता और परिवर्तन लाने का एक सशक्त माध्यम भी है।

अंततः 'भीगते सावन' का यह कहानी संग्रह हर साहित्य प्रेमी के लिए पढ़ने योग्य है। यह न केवल हमारे समय के महत्वपूर्ण मुद्दों और सामाजिक समस्याओं को उठाता है, बल्कि मानवीय रिश्तों और संवेदनाओं का भी बहुत ही संवेदनशील चित्रण करता है। सुरेश सौरभ की यह रचना न केवल मनोरंजन प्रदान करती है, बल्कि एक नए दृष्टिकोण से जीवन को समझने का अवसर भी देती है। उनकी लेखनी में जो स्पष्टता, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकारों के प्रति जागरूकता है, वह निश्चित रूप से हिंदी साहित्य में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान सुनिश्चित करती है।

पुस्तक–भीगते सावन
लेखक - सुरेश सौरभ
प्रकाशन- अद्विक प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य- 160 रुपये

लघुकथा

शब्द

अविनाश अग्निहोत्री

एक दुकानदार को भिक्षुक को डांटते हुए देख दादा जी ने अपने किशोरवय पोते का हाथ कसकर पकड़ लिया।

यह देख अनमोल ने उनसे पूछा,दादाजी क्या वाकई बुजुर्ग लोगों के पास प्रतिकार करने के लिए शब्द नहीं होते।

क्योंकि ठीक इस भिखारी की तरह आप भी मम्मी पापा के गलत व्यवहार का प्रतिकार ही नही करते।

तब उसे देख दादाजी ने उससे कहा,बेटा कहने को तो हमारे पास भी बहुत होता है।पर भी हम चुप बस इसीलिए रह जाते है। क्योंकि हम ये जानते है कि क्रोध और आवेश में कहे शब्दों का भावी परिणाम क्या होता है।

लघुकथा

बाल-बाल

रामेश्वरम तिवारी

बेचारा रामदीन दिन भर मेहनत, मजूरी करने के बाद शाम के वक्त बाज़ार से होता हुआ घर की ओर लौट रहा था कि किसी सिरफिरे द्वारा फैलाई गई अफ़वाह की वजह से शहर के भीड़ भरे इलाक़े में अचानक दो समुदायों के बीच दंगे की आग भड़क गई!

सामने से सैलाब की तरह भीड़ का रेला आया और रामदीन को मस्जिद की ओर खींचता चला गया। जालीदार टोपीधारियों ने उसको बढ़ी हुई दाढ़ी और सफ़ेद कुर्ता-पाजामा पहने हुए देखा और उसे अपने समुदाय का समझकर उसकी जान बक्श दी!

तभी अगले चौराहे पर दूसरी ओर से भीड़ का रेला आया और रामदीन को बरबस मंदिर की ओर खींचता चला गया। उसकी बढ़ी हुई दाढ़ी और टोपी को देखकर तिलकधारियों की फ़ौज जैसे ही उस पर वार करने को हुई उसके फटे कुर्ते की आस्तीन से बाहर लटकते हुए हाथ पर राम-नाम का गोदना देखकर उसे अपने समुदाय का समझकर छोड़ दियाज़!

अब आप चाहें, तो इसे ईश्वर-अल्लाह का करिश्मा कह लें या फिर क़िस्मत का कमाल या फिर धार्मिक पहचान के प्रतीक-चिह्नजकि बेचारा रामदीन दंगाइयों के हत्थे चढ़ने से बाल-बाल बच गया!

व्यंग्य

शांतिलाल जैन
लेखक व्यंग्यकार हैं।

खास मेहमान आएंगे तो निकालेंगे

डिनर पर बॉस घर आए थे. इतना ही तो कहा था मैंने कि डिनर सेट निकाल लेते हैं. बमक गई वाईफ. खास मेहमान आएँगे तो निकालेंगे. डिनर सेट खुश हुआ. आज फिर ड्यूटी पर जाने से बच गया. मिडिल क्लास आदमी हो या उसके घर का सामान, ड्यूटी पर जाने से बचा रहे तो खुश रहता है. उसकी कथा फिर कभी. फ़िलवक्त तो हम जिक्र उस डिनर सेट का कर रहे हैं जिसने डाईनिंग टेबल पर अभी तक डेब्यू भी नहीं किया है. खास मेहमान आएँगे तो निकालेंगे।

अब आपसे क्या शेयर करें श्रीमान, खास मेहमान के पैरामीटर्स पर आज तक कोई खरा उतरा ही नहीं. घर में कभी जीएम आए कभी सीजीएम, कभी जिजाजी तो कभी साले सा., कभी बचपन का यार तो कभी जिंदगी में सौत होने की कगार से लौट गई हमनफ़स. 'ख़राब हो जाएगा' की आशंका से हर बार कदम पीछे खींच लिए गए. 'एक भी पीस टूट गया तो सेट बिगड़ जाएगा'. रिश्तों से ज्यादा सामान सहेज कर रखती है वाईफ मिडिल क्लास हसबंड की।

बैकग्राउंड में ये श्रीमान् कि अब से कोई अठ्ठाईस साल पहले पेईंग केपेसिटी से बाहर जाकर हमने पैंतीस आईटम्स वाला बॉन-चाईना का महँगा सेट खरीदा. संग्रहालयों में रखे चांदी के रजवाड़ी बर्तनों सा उसे एक खास एंगल पर सजा कर रखा, कांच के पारदर्शी पल्लों वाले केबिनेट से निरंतर झांकता. आरजू बस इतनी कि मेहमान के दीदों में उतरकर उन्हें विस्मित कर जाए. आपके घर में इतना महंगा डिनर सेट है!! तो अपन के तो पैसे वसूल. इस्तेमाल का तो सवाल ही नहीं. इसके किसी बाऊल ने दाल का स्वाद कभी नहीं चखा. इसकी किसी क्वार्टर प्लेट ने पुलाव की खुशबू का आनंद कभी नहीं लिया. सरसों के तेल की कड़वाहट पाने को फुल प्लेटें आज भी तरस रही है. बर्तन साफ़ करने के कूंचड़े से घिसे जाने की पीड़ा इसने कभी सही नहीं. क्षतिग्रस्त हो जाने भय से हमने बाज़दफ़ा कांसे के कटोरे में उंडेल कर चाय सुड़क ली मगर बॉन-चाईना के कपों-रकाबियों को डिस्टर्ब नहीं किया. 'खास मेहमान आएँगे तो निकालेंगे' ने इसे मोर्चे पर कभी नहीं आने दिया. हम उसे निकालते भले नहीं हैं मगर उसकी बात जरूर निकालते हैं।

काबिल मेहमानों की बाट महंगे बर्तन ही नहीं जोहते. चादरें, तकियों के गिलाफ़ और झक्क सफ़ेद रोएँदार टॉवेल भी जोहते हैं. चिरायु होने का वरदान प्राप्त वीआईपी चादरों को पता है उन्हें कभी काम पर नहीं जाना पड़ेगा. कलर फेड हो जाने के भय से वे डबल बेड पलंग के नीचे बने बॉक्स में सुरक्षित, लम्बा और तनावरहित जीवन फिनाईल की गोलियों के संरक्षण में गुजार रहीं है. पियर्स साबुन, बॉम्बे डाईंग के रोएँदार टॉवेल, टॉयलेट के बाहर डले बाटा के स्लीपर्स तक में एक बेफिक्री है ङ्क वे समूची कायनात के डूब जानेवाली क़यामत का दिन आने तक बचे रहेंगे।

घर में एक गेस्ट रूम भी है. आधे मास्टर बेड-रूम की शहादत देकर किसी तरह निकाला गया. हाऊस वार्मिंग सेरेमनी वाले दिन के बाद किसी अतिथि का मुँह इसने शायद ही देखा हो. पहलीबार आनेवाले हर मेहमान को हम शान से ये रूम दिखाते हैं, मगर उसे सुलाते वहीं हैं, हॉल के फर्श पर एक्स्ट्रा गादी बिछाकर. खास मेहमान आएँगे तो यहाँ ठहराएँगे. दिखावे की चक्की में पिसते मध्यमवर्गीय परिवार में बर्तनों से लेकर बिस्तरों तक मेहमानों की बाट जोहते सामानों तक की एक लम्बी लिस्ट है उन क्रिकेटरों की मानिंद जिन्हें आईपीएल में खरीदा तो जाता है मगर खिलाया नहीं जाता. माँ के निज़ाम से वाईफ के किंगडम तक इस मोर्चे पर कुछ नहीं बदला है।

फ़िलवक्त, बॉस और मैं नॉन-वीआईपी बर्तनों में खाना खा रहे हैं. हालाँकि केबिनेट से झाँकते वीआईपी बर्तनों पर उनकी नज़र पड़ चुकी है मगर उन्होंने इसका बुरा नहीं माना. उनका भी एक घर है, एक फेमेली है, एक वाईफ है, और एक महंगा डिनर सेट है जिसे निकाले जाने के लिए खास मेहमान की एक अंतहीन प्रतीक्षा है. मिसेज बॉस को भी लगता है - 'खास मेहमान आएंगे तो निकालेंगे'।

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक

'पंचायत' वाले पंकज झा की ज्ञात - अज्ञात कलाकृतियां

हम बात कर रहे हैं पंचायत सिरीज़ के विधायक जी के बारे में जिनके बात करने का तरीका बिल्कुल ही बेबाक है जिन्हें हर इंसान अभिनय करने वाला इंसान दिखाई पड़ता है। जिनका विचार है कि हम इतने आडंबरों और झूठ के बीच घिरे हुए हैं कि खुद को खोज पाना ही मुश्किल हो उठता है। अभिनय, कविता, पेंटिंग तीनों के साथ ही इंसानियत, मानवता को साध लेने वाले पंकज झा जैसा उस सिरीज़ में दिखते हैं वैसे बिल्कुल हैं नहीं। खेत-खलिहानों में चहलकदमी करते हुए, धान, गेहूं, मकाई के बीच झूमते हुए, बाग-बगीचों में आम, अमरूद खाते हुए, नावों पर दिन-दिन भर खेलते, घूमते हुए, कमल के सैकड़ों पुष्पों के बीच उसको महसूसते हुए, चिड़ियों, पक्षियों, बादलों इन सभी के साथ उड़ते-झूमते हुए बहुत ही धनवान बचपन के बीच से आगे आकर यहाँ तक के सफर पर हैं। इनके पुणे वाले पेंटिंग के स्टूडियो में आज भी पक्षियों का जमघट लगता है। प्रकृति का साथ इन्हें पसंद है और पसंद है स्वच्छंद जीवन। बहुत ही गहरे, गंभीर विचारों के बीच डूबते-उतराते भावों के सागर में गोते लगाते दार्शनिक भी हैं पंकज।

पंचायत के विधायक जी से शायद ही कोई अपरिचित होगा। मैं कहता हूँ, हाँ वाकई आप अपरिचित हैं। विधायक जी अभिनय में माहिर हैं, विधायक जी कविता रचने में माहिर हैं ये सब तो आप जानते ही होंगे पर एक जो सबसे बड़ी बात है कि विधायक जी ज्ञात से अज्ञात, स्वेत-श्याम माध्यम के बिल्कुल सच्चाई से रूबरू कराने वाले कृतियों के सर्जक भी हैं इससे आप जरूर अपरिचित होंगे। आज मैं आपको उनके उसी पक्ष से परिचय करवाने के फिराक में हूँ। विधायक जी अमूर्तन को साध लेने वाले चित्रकार भी हैं।

हम बात कर रहे हैं पंचायत सिरीज़ के विधायक जी के बारे में जिनके बात करने का तरीका बिल्कुल ही बेबाक है जिन्हें हर इंसान अभिनय करने वाला इंसान दिखाई पड़ता है। जिनका विचार है कि हम इतने आडंबरों और झूठ के बीच घिरे हुए हैं कि खुद को खोज पाना ही मुश्किल हो उठता है। अभिनय, कविता, पेंटिंग तीनों के साथ ही इंसानियत, मानवता को साध लेने वाले पंकज झा जैसा उस सिरीज़ में दिखते हैं वैसे बिल्कुल हैं नहीं। खेत-खलिहानों में चहलकदमी करते हुए, धान, गेहूं, मकाई के बीच झूमते हुए, बाग-बगीचों में आम, अमरूद खाते हुए, नावों पर दिन-दिन भर खेलते, घूमते हुए, कमल के सैकड़ों पुष्पों के बीच उसको महसूसते हुए, चिड़ियों, पक्षियों, बादलों इन सभी के साथ उड़ते-झूमते हुए बहुत ही धनवान बचपन के बीच से आगे आकर यहाँ तक के सफर पर हैं। इनके पुणे वाले पेंटिंग के स्टूडियो में आज भी पक्षियों का जमघट लगता है। प्रकृति का साथ इन्हें पसंद है और पसंद है स्वच्छंद जीवन। बहुत ही गहरे, गंभीर विचारों के बीच डूबते-उतराते भावों के सागर में गोते लगाते दार्शनिक भी हैं पंकज।

पंकज झा ओशो को अपना मास्टर मानते हैं। उनके विचारों से रूबरू होने के बाद, उनके थेरेपी से साक्षात होने के बाद खुद को एकदम बदला-बदला सा पाते हैं और आज जहाँ भी हैं, खुश हैं, संतुष्ट हैं। किसी के भी एप्रीसिएशन से परे के विचारक बन गए हैं। उनका कहना है कि मैंने अपनी दुनिया बना ली है जहाँ मैं कविताएं लिखता हूँ, जहाँ मैं पेंटिंग करता हूँ, जहाँ मैं मेडिटेशन करता हूँ, जहाँ मैं खुद को खुद से साक्षात करता हूँ, जहाँ मैं, मैं रहता हूँ। मैं ग्रुप बाजी नहीं कर सकता, मैं किसी को बार-बार प्लीज नहीं कह सकता, मैं चापलूसी नहीं कर सकता कि मुझे काम मिले इसकी चाहत नहीं है मुझे। बड़ा बन जाने की चाहत भी नहीं है मुझमें। जिनको नाम कमाने की बड़ी चाहत होती है अन्ततः वो गुमनाम हो जाते हैं। ऐसी जिंदगी मुझे नहीं चाहिए। अब मेरी जिंदगी बदल गई है और अब मैं कह सकता हूँ कि ऐक्टर, पेंटर, राइटर इन सभी के साथ मैं एक इंसान भी हूँ, एक आदमी भी हूँ। मैं ऐक्टिंग करता हूँ पर ऐक्टर नहीं हूँ, ऐक्टर तो आम जीवन में लोग हैं। बाप, बाप होने की ऐक्टिंग कर रहा है, भाई,भाई होने की ऐक्टिंग कर रहा है, बहन, बहन होने की ऐक्टिंग कर रही है। मुझे ऐसा लगा कि जब मैं ऐक्टिंग कर रहा होता हूँ तो वहाँ पर जीवन जी रहा होता हूँ। हम जब जीवन जी रहे होते हैं तो वहाँ पर हम ऐक्टिंग कर रहे होते हैं। मुझे यह विजन मेरे मास्टर ओशो से मिला।

पंकज के श्याम-श्वेत कृतियों में दिन-रात, सुख-दुख सा कुछ भी भान नहीं होता या कह सकते हैं कि वो किसी और को समझने के लिए कृतियों का सृजन नहीं करते बल्कि खुद को खुश रखने के लिए, मन को रंगों के साथ बहते जाने के लिए, समय के सामंजस्य को खुद के साथ ढाल लेने के लिए या कह सकते हैं कि बस मज़े लेने के लिए सृजन करते हैं। पंकज कृतियों के सृजन के समय पूरी तरह कृतियों के ही हो जाते हैं, झूमते हैं, आनंद लेते हैं, इतराते हैं, कृतियों से संवाद करते हैं और बहते हुए रंगों के साथ बहते हैं, ब्रशों के साथ इधर से उधर आनंदित हो बहकते और भटकते हैं और अंत में बिना किसी आकांक्षा के दर्शकों हेतु छोड़ देते हैं। श्याम-श्वेत रंगों के बीच का जो शेड है, जिससे कृतियों को संतुलित किया गया है लाजवाब है। कृतियों से जुड़ने हेतु दर्शकों को समय देना होगा, रंगों के साथ बिना किसी पूर्वाग्रह के गहरे उतरना होगा, रंग जहाँ तक की यात्रा कराए, साथ-साथ चलना होगा। विराम, अल्प-विराम, लय, छंद के साथ ही विशेष ठहराव को भी भाँपना होगा तब कहीं जाकर साक्षात्कार करने के तल तक खुद को पहुँचा हुआ मानना होगा। वहाँ भी चित्रकार के तल तक पहुँच कर देखने के भ्रम से ऊपर उठना होगा। कारण चित्रकार की नजर भी तभी तक थी जब तक कि वो सृजनशील था जैसे ही चित्रकार अपने साधना से इतर हुआ, आम हो गया अब उसे भी उस नजर की थाह नहीं। फलत~ कृतियों से विशेष कर पंकज झा के कृतियों से अलग-अलग समय में अलग-अलग तरीके से संवाद करना संभव हो पाता है। इन सभी से अलग तो ये है कि उन्हीं कृतियों से आप जितनी भी बार मिलते हैं, कृतियाँ हर

बार एकदम से अलग रुप में नजर आती हैं। जहाँ आप भी बस मूक बने निहारते रहेंगे और घंटों निहारते रहेंगे। फलक पर आंखें जहाँ तक चलेंगी उससे थोड़ा सा आगे-आगे कुछ तो चलता हुआ दिखाई देगा जिसके सहारे आंखें अपनी यात्रा पूरी करती हैं और रंगों के हर छोटे-बड़े पैचेज और स्ट्रोकों से परिचित होती हैं।

एकल प्रदर्शनियों के श्रृंखला में अभी सितंबर महीने में होटल हयात पुणे में पंकज के कृतियों ने लोगों का खूब ध्यान खींचा जबकि उनका कहना है कि %मैं किसी के एप्रिसिएशन से प्रभावित नहीं होता, मुझे दरकार भी नहीं है।% पर सच्चाई तो ये है कि आप जिसके पीछे-पीछे भागते हैं, जिसे पाने की चाहत रखते हैं वो आपसे चाहे कुछ ही कदम सही पर आगे-आगे ही भागता है और जैसे ही आप उसके मोह को त्याग देते हैं उसे अपने अस्तित्व और वजूद पर संकट का भय सताने लगता है और वो आपको आसानी से प्राप्त हो जाती है। पंकज के साथ भी कुछ ऐसा ही है, उनके कृतियों के साथ भी कुछ ऐसा ही है जहाँ वो किसी के पसंद या नापसंद को, कला के नियम को ना मानते हुए बस अपने मन की करते हैं। दर्शक के मनोभावों को जरा भी प्रभावित नहीं करना चाहते बावजूद इसके दर्शक उनके कृतियों से जुड़े चले आते हैं। पटना आर्ट कॉलेज से ललित कला की शिक्षा प्राप्त कर जैसे ही आप दिल्ली पहुँचते हैं, कहीं अपने कृतियों के सृजन में रमें हुए आपको एन.एस.डी. के कोई विशेष देख लेते हैं और आपको वहाँ आने का न्योता मिल जाता है जहाँ डिजाइन के साथ ही अभिनय का भी लगातार मौका मिलता रहा। मीरा नायर जो अपने किसी प्रोजेक्ट हेतु कलाकार की खोज में थीं जहाँ बहुत से लोगों के बीच आपका चयन हुआ उसके बाद वहीं से मुंबई तक का भी सफर तय हुआ और फिल्मों से जुड़ने का भी, खैर तमाम फिल्मों और सिरिजों में काम करने के बाद अब आप बस अपने आप में ही रहना पसंद करते हैं।

कलाकारों के निरंतर सृजन वेदना से जूझने के बाद उन्हें अपने कृतियों को बेचने हेतु जो तमाम पापड़ बेलने पड़ते हैं, ऐसे परिस्थितियों से गुजरते हुए लोगों को देखना भी आपको व्यथित कर गया और मन ने इन सभी से इतर बस मन की करने को कहने लगा। ऐसी ही तमाम घटनाएं हैं जो पंकज झा को बेबाक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बचपन में जब खेलने की उमर होती है, उस समय की तमाम बंदिशों ने अभिनय करना सिखा दिया। शिक्षक के सामने बाहर जाने हेतु छुट्टी मांगने के लिए जो बिल्कुल ही बेचारों सा मुंह बनाना पड़ता था, अभिनय तो यहीं से शुरू हो गया था फिर धीरे-धीरे इन्हें लग गया था कि जीवन खुद एक अभिनयशाला है जहाँ कदम-कदम पर अभिनय की दरकार होती है और जहाँ सभी हमेशा अभिनय कर रहे हैं जो अभिनय से बचने का प्रयास करता है और अपने स्व को जीने का प्रयास करता है लोगों के नज़र में खटकने लगता है। पंकज कहते हैं कि पढ़ना मुझे कभी भी पसंद नहीं रहा मुझे बस कलाकृतियाँ बनाना पसंद था। मैं शुरू से ही खुद को मिसफिट मानता हूँ और आज भी मिसफिट ही हूँ। मुझे लगता है कि कहीं भी फिट होने के लिए हमें पहले खुद को मारना होगा जो मुझे पसंद नहीं। मुझे बचपन से ही पेंटिंग पसंद था और मैं वही करता था फलत~ आर्ट कॉलेज पटना तक पहुँच सका और आज यहाँ तक। पंकज के %ज्ञात अज्ञात% प्रदर्शनी को दो दिसंबर से आठ दिसंबर के बीच जहाँगीर गैलरी देखा जा सकता है।

माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र एवं संग्रहालय का भाषा सत्याग्रह

इंदौर। हमारे आसपास, घर, बाहर कार्यक्षेत्र में कई बार सहकर्मी के रूप में, मित्र या पड़ोसी के रूप में हिन्दी के साथ अन्य भारतीय भाषा भाषी के संपर्क में हम आते हैं उनसे हम उनकी भाषाओं के कितने शब्द सीखते या अपनाते हैं? इस परिसर में ही कितने शिक्षक पदाधिकारी मराठी भाषी हैं, जिनकी मूल मातृभाषा मराठी या बंगाली हैं बोलियों में बिहारी भी रहे लेकिन हमने उन भाषा और बोलियों को सीखने के बजाय अंग्रेजी के शब्दों को ही अपनाया। हमारे जीवन में हिंदी के कई शब्दों की स्थायी जगह अंग्रेजी के शब्दों ने ले ली बल्कि उन शब्दों के मूल अर्थ नई पीढ़ी भूलने लगी है।

यह बात शैक्षणिक संस्था कस्तूरबा ग्राम राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट में आयोजित कार्यशाला में डॉ. शोभा जैन ने कही। कार्यशाला का आयोजन माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र एवं संग्रहालय के भाषा सत्याग्रह प्रकल्प के अंतर्गत किया गया था।

तीन चरणों में आयोजित इस कार्यशाला का हिस्सा पूरे कस्तूरबा ग्राम परिसर के विद्यार्थी,शिक्षक एवं विविध विभागों के पदाधिकारी भी रहे। प्रथम चरण में हिंदी भाषा की उपयोगिता,प्रयोग के साथ दिनचर्या में होने वाली उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों पर आपसी संवाद किया गया। हिन्दी के मानक शब्दों को जानने समझने की ओर उन्होंने ध्यान केंद्रित किया। कार्यशाला में श्यामपट का उपयोग कर अक्सर लिखे जाने वाले गलत शब्दों के सही शब्दों पर बात रखी गई डॉ शोभा जैन कहा कि बच्चे ही नहीं बड़े भी इन दोनों शब्दों में सही शब्द नहीं पहचान पाते जैसे, पड़ना और पढ़ना। दूसरा स और श के उच्चारण में कहां स का प्रयोग हो कहां श का इस ओर केवल ध्यान ही नहीं देना है बल्कि गलत बोलते समय टोककर सही बोलने की आदत भी हमें विकसित करनी होगी। आमतौर पर गलत अंग्रेजी के उच्चारण पर या अंग्रेजी न आने पर हम उसे सीखने की सलाह देते हैं लेकिन गलत हिंदी के उच्चारण या सही हिंदी न होने पर टोकने की आदत हममें नहीं हैं।

उन्होंने शिक्षक और विद्यार्थियों के भाषा सम्बंधित प्रशिक्षण और प्रायोगिक रूप से ऐसी कार्यशालाओं के आयोजन पर जोर दिया।इस

संवाद में शिक्षकों ने भी अपने द्वारा की जा रही त्रुटियीं के सुधार की बात रखी। कार्यशाला के दूसरे चरण में दो गतिविधियां की गई जिसमें विजेता का मापदंड एक मिनट में शुद्ध वर्तनी में 15 शब्द लिखने थे। वे शब्द अलग-अलग क्षेत्र से जुड़े थे जैसे - व्यंजन %क% से -नदी, फल, फूल, ग्रंथ, वाहन, व्यक्ति, भोजन, वस्त्र या रचना, किताब लेखक आदि का नाम लिखना था। व्यंजन का चयन एक पर्ची निकालकर किया गया। इसमें शिक्षक एवं विद्यार्थियों में बहुत उत्साह से हिस्सा लिया।

दूसरी गतिविधि इसी तरह शब्द पर केंद्रित थी। पर्ची से चयन कर एक शब्द निकाला गया जैसे- 'किसान' शब्द निकला। प्रतिभागियों को 1 मिनट में 'किसान' शब्द की व्याख्या शुद्ध वर्तनी में करनी थी।

विजेताओं का मापदंड शुद्ध वर्तनी एवं गुणवत्ता पूर्ण व्याख्या थी।

तीसरे चरण में विजेता शिक्षक डॉ. योगेश खिच, डॉ. गायत्री पटेल, डॉ. पूनम कौशिक एवं विद्यार्थियों में विजेता रहीं अदिति दत्त एवं सिया को ट्रस्ट की सचिव अनघा पोल द्वारा भारतीय भाषा सत्याग्रह की प्रतियां एवं डॉ. शोभा जैन की किताबें पुरस्कार स्वरूप भेंट की गईं। डॉ. शोभा जैन ने उनके द्वारा एक मिनट में लिखी गई व्याख्या को भी सभी को पढ़कर सुनाया, उसके शाब्दिक चयन गुणवत्ता और वर्तनी की अशुद्धियां भी सबके सामने रखी।

कार्यशाला का समापन हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के प्रयोग और अशुद्ध हिंदी पर टोकने के संकल्प के साथ हुआ। इस अवसर पर कस्तूरबा ग्राम ट्रस्ट शिक्षण संस्थान के शिक्षक एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष करुणाकर त्रिवेदी भी मौजूद रहे।

वेब समीक्षा
आदित्य दुबे
(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

रहस्य ,रोमांच और रोमांस से परिपूर्ण एक वेब सीरीज

नेटफ्लिक्स की बहुप्रतिक्षित वेबसिरीज-' ये काली काली आंखें ' का दूसरा सीजन गत दिनों रिलीज हुआ और जैसी इसके बारे में उम्मीद थी यह बिल्कुल वैसी ही है। यह वेबसिरीज ढेर सारे रहस्म के साथ लौटी है। इसमें रहस्य के साथ रोमांच, रोमांस और एक्शन भी है, जो दर्शकों को काफी पसन्द आ रहा है। सोशल मीडिया पर इस सिरीज की जबर्दस्त चर्चा है और ताहिर राज भसीन के अभिनय की जमकर प्रशंसा हो रही है।

सिरीज़ के सीजन एक में ताहिर राज भसीन ने विक्रांत की भूमिका मे पूर्वा (अंचल सिंह) को मारने के लिए जालान (अरुणोदय सिंह)

से सौदा किया था ताकि वह शिखा (श्वेता त्रिपाठी) के साथ रह सके। मगर हालात बिगड़ गए हैं और जालान ने पूर्वा को मारने के बजाय उसको किडनैप कर लिया था । सीज़न दो उसी दृष्य से शुरू होता है जिसमें पूर्वा का अपहरण दिखाया गया है । बड़ा

नाटकीय दृष्यांकन है । शिखा की शादी किसी और से हो रही है, और अब विक्रांत को पूर्वा को मारना है ताकि सच्चाई सामने न आए। मगर अखिराज का एक पुराना दुश्मन वापस आ गया है, जो चाहता है कि विक्रांत मर जाए और पूर्वा को ले जाया जाए। इस बीच, पूर्वा के पूर्व प्रेमी की एंट्री होती है, जिसका नाम गुरु है, इसकी भूमिका गुरमीत चौधरी ने निभाई है। इसके साथ ही शुरू होता है सिरीज में आता है एक नया मोड़ ।

विक्रांत, शिखा की शादी के एक दिन बाद उसके घर पहुंचता है और देखता है उसकी शादी हो चुकी है। वह न तो रो पाता है और न हार मानने को तैयार होता है। तभी शिखा उसे याद दिलाती है कि उसने भी हालातों से हार मानकर पूर्वा से शादी की थी। ये शो पिछले सीजन से और भी ज्यादा दिलचस्प है। अब देखना है कि क्या विक्रांत को उसका प्यार मिलेगा और क्या गुरमीत, पूर्वा को जालान के चंगुल से छुड़ा पाएगा ।इस सिरीज़ में प्यार, नफरत और दुश्मनी सब दिखाया गया है। एक तरफ विक्रांत, शिखा से सच्ची मोहब्बत करता है और दूसरी तरफ पूर्वा विक्रांत से जुनूनी इश्क करती है। मगर इस सीजन में उसका एक्स बॉयफ्रेंड लौट चुका है और पूर्वा को जालान किडनैप कर लेता है।

कभी-कभी तो लगता है कि सिरीज़ की कहानी अपराध से जुड़ी है और उसका निर्वाह एक कॉमेडी

सीरियल के माफिक हुआ है । सिरीज़ कितनी तरंग में लिखी और बनाई गई है, उसका बस एक उदाहरण दिए देते हैं।दूसरे एपीसोड में एक दृष्य है।अखेराज अवस्थी का गोद लिया लड़का कहो या साइड वाला चम्पू वो शिखा की शादी वाले दिन उसके बाथरूम में बेहोश पड़ा है। विक्रांत बिल्कुल पुराने पेड़ की डाल से बेताल को उतारकर अपने कांधे पर टांगे उसके यहां पहुँचता है। जिनको कभी खून देखकर चक्कर आ जाता था, वो एक छह फुट लम्बे इंसान के टुकड़े टुकड़े कर देते हैं और उसे ऐसे झोले में डालकर चल देते हैं, जैसे गोभी खरीद कर बाजार से लौटे हैं। और, न जाने कैसा तो पुलिस वाला है जो वही झोला हाथ में लेकर टहलता रहता है और उसे भनक तक नहीं आती कि उस झोले में एक छह फुटिया इंसान है।

सिद्धार्थ सेनगुप्ता और उनकी टीम ने पिछली बार की तरह इस सीजन में भी रहस्य का ठीक-ठीक निर्वाह नहीं किया है । सिरीज़ का सस्पेंस इसका सास-बहू के टीवी सीरियल जैसा है और कलाकार इसी फ्रेम में काम करते नज़र आते हैं ।वरुण बडोला वाली भूमिका का आइडिया जिसका भी है बहुत बुरा है। उनकी फौज तो ऐसी लगती है जैसे रामगढ़ से सीधे उनके तम्बू पर ही शिफ्ट हुई है। कहानी, पटकथा और संवादों में सिरीज़ ऐसी मात खाई है कि किसी भी भूमिका के साथ दर्शक छठे एपिसोड तक जुड़ ही नहीं पाते। मामला फिर खाई पर आकर लटका है और हो सकता कि नेटफ्लिक्स के जियाले इसका तीसरा सीजन भी बना डालें। लेकिन, याद यहां यही रखना है कि ठाकुर ने कहा था कि वे दो थे । सौरभ शुक्ला को खामखाँ गब्बर बनने की कोशिश करना छोड़ देना चाहिए। जॉली एलएलबी के जज वो बढ़िया बनते हैं, उनको वैसा ही कुछ करते रहना चाहिए ।

अर्धवार्षिक के बाद जनवरी में होगी प्री-बोर्ड परीक्षा, शिक्षा विभाग ने जारी किये टाइम टेबल

अर्द्धवार्षिक परीक्षा 9 दिसंबर से, पर्चा हल करने के बाद अलग प्रश्न पत्र की तैयारी के लिए लगाई जाएंगी कक्षाएं

संजय द्विवेदी बैतूल। जिले में कक्षा 9वीं से 12वीं तक विद्यार्थियों की अर्धवार्षिक परीक्षा 9 दिसंबर से शुरू होगी। इसे लेकर लोक शिक्षण संचालनालय ने आदेश जारी कर दिए। आदेशानुसार अर्धवार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्र के बाद विद्यार्थियों की छुट्टी नहीं होगी, उन्हें स्कूल में ही शिक्षक अगले प्रश्नपत्र की तैयारी कराएंगे। विद्यार्थियों का कहना है कि इस प्रकार के आदेश पहली बार ही जारी हुए, नहीं तो परीक्षा के बाद छुट्टी हो जाती है। फिलहाल जारी आदेश में स्पष्ट रूप से विभाग ने प्रश्न पत्र की तारीख और समय के बाद अगले प्रश्नपत्र की तैयारी के बारे में उल्लेख किया है। इसे विभाग ने जारी टाइम टेबल पर भी लिखा है। अर्धवार्षिक परीक्षा के बाद परिणामों के आधार पर विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर का पता चल जायेगा। इसी आधार पर आगामी तैयारियां कराई जायेगी। बता दे कि जिले में हाईस्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल की अर्धवार्षिक परीक्षा 9 दिसंबर से शुरू होकर 18-19 दिसंबर तक चलेगी। जिले में दो पाली में परीक्षा संपन्न कराई जाएगी, पहली पाली 9 से 12 बजे तक रहेगी, वहीं दूसरी पाली में 1.30 बजे से 4.30 बजे तक परीक्षा आयोजित होगी। परीक्षा के लिए माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा ही मेल पर प्रश्न पत्र उपलब्ध कराए जाएंगे। प्रश्नपत्रों का चयन माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा ही किया जाएगा।

कोर्स पूरा कराना और अच्छा परिणाम लाना चुनौती- अभी स्कूलों में 50 फीसदी ही कोर्स पूरा हो पाया है। कुछ स्कूलों की स्थिति इससे भी नीचे है। जिसका एक कारण यह भी रहा कि सितंबर-अक्टूबर तक सरप्लस शिक्षकों को शिक्षकों की कमी वाले स्कूलों में भेजने की प्रक्रिया चली। इसमें शुरुआती जुलाई से लेकर अक्टूबर तक पढ़ाई प्रभावित रही है। अब 9 दिसंबर से 18-19 दिसंबर तक अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं आयोजित होगी। अर्धवार्षिक परीक्षा के बाद क्रिसमस और नए साल में अवकाश जैसी स्थिति रहेगी। 16 जनवरी से फिर प्री-बोर्ड परीक्षा शुरू होंगी। प्री-बोर्ड समाप्त होने के लगभग एक माह बाद ही वार्षिक परीक्षाएं शुरू हो जाएगी। ऐसे में शिक्षकों को कोर्स पूरा कराना चुनौती बन गया है।

प्री-बोर्ड परीक्षाएं 16 जनवरी से शुरू होंगी - स्कूल शिक्षा विभाग ने प्री-बोर्ड परीक्षा का टाइम टेबल घोषित कर दिया है। हाईस्कूल और हायर सेकंडरी की प्री-बोर्ड परीक्षाएं 16 जनवरी से शुरू होंगी। इसके बाद 27 फरवरी से वार्षिक परीक्षाएं शुरू हो जाएंगी। विभाग ने ऐन वक्त पर प्री-बोर्ड करवाने का फैसला लिया। हालांकि इस बार भी प्री-बोर्ड परीक्षा होने की उम्मीद कम थी, थी, लेकिन अचानक स्कूल शिक्षा विभाग ने इसका शेड्यूल जारी कर दिया है। इधर प्राचार्यों की माने तो अर्द्ध परीक्षा के बाद कोर्स का बचा हुआ भाग पूरा किया जाएगा। यह प्रयास रहेगा कि प्री-बोर्ड परीक्षाओं में शत-प्रतिशत कोर्स को पूरा किया जाए, लेकिन छात्रों को इस कोर्स को कवर करने के लिए कम समय मिल पाएगा। प्री-बोर्ड के बाद फरवरी अंत से वार्षिक परीक्षाएं शुरू हो जाएंगी।

मिस मैनेजमेंट का शिकार हो रहे शिक्षक-बच्चे

जानकारों का कहना है कि शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों द्वारा जो नए-नए प्रयोग किए जाते हैं, इससे जहां न सिर्फ छात्रों में भ्रम की स्थिति रहती है, वहीं उनके शिक्षक भी मिस मैनेजमेंट का शिकार होते हैं। पहले कमजोर बच्चों के लिए बेस्ट ऑफ फाईव प्रणाली बनाई थी, लेकिन इसे बंद कर दिया गया। इसमें यह था कि यदि बच्चा 6 में से 5 विषय पास करता है तो उसे उत्तीर्ण माना जाता था, लेकिन अब बच्चे को सभी विषय पास करने के बाद ही उत्तीर्ण की श्रेणी में रखा जायेगा। यदि बच्चा एक विषय में फेल होता है तो उसे सप्लीमेंट्री का पेपर देकर पास होना होगा। इसी तरह 5 और 8वीं में अर्धवार्षिक परीक्षाएं होने वाली है। जिसके 20 अंक वार्षिक परीक्षा में जोड़े जायेगे। हर साल नये-नये प्रयोग से शिक्षक और बच्चे भ्रमित हो रहे है।

इनका कहना है

अर्धवार्षिक परीक्षा का कोर्स लगभग पूरा हो चुका है। प्री-बोर्ड परीक्षा से पहले कोर्स पूरा कराने का प्रयास है। अर्धवार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्र देने के बाद विद्यार्थियों को अगले पेपर की तैयारी शिक्षकों द्वारा कराई जायेगी। परीक्षा के आयोजन को लेकर तैयारियां चल रही है।

- सुबोध शर्मा,
जिला परियोजना अधिकारी, शिक्षा विभाग बैतूल

प्रेस क्लब की साधारण सभा की हुई बैठक

देवास। प्रेस क्लब देवास की साधारण सभा की बैठक आज एक निज़ी गार्डन में संपन्न हुई । पूर्व प्रेस क्लब अध्यक्ष असलम खान की अध्यक्षता मे। हुई इस बैठक में नव मनोनीत प्रेस क्लब अध्यक्ष

ललित शर्मा,सचिव शेखर कौशल ने सभी सदस्यों तथा वरिष्ठों का धन्यवाद प्रस्ताव पारित करते हुए आभार माना।उल्लेखनीय है कि इस बार देवास प्रेस क्लब के चुनावों में सभी दावेदारों ने अभुतपूर्व एकता का परिचय देते हुए चुनावों को नकारा और सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी के लिए सभी पदों पर योग्य उम्मीदवारों का मनोनयन किया गया। आज हुई साधारण सभा की बैठक में आने वाले समय के लिए कई महत्तवपूर्ण निर्णय लिए गए,साथ ही पेंशन शुरू होने पर वरिष्ठ पत्रकार मुन्ना वारसी का सम्मान भी किया गया। सहभोज के साथ समाप्त हुई बैठक में आभार सचिव शेखर कौशल ने माना।

सिटी कॉन्वेंट स्कूल में स्पोर्ट्स वीक का शुभारंभ

देवास। सिटी कॉन्वेंट स्कूल में स्पोर्ट्स वीक का शुभारंभ उत्साह और जोश के साथ किया गया। इस आयोजन में विद्यार्थियों ने अपनी खेल प्रतिभा और खेल भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विभिन्न हाउस ने खेलों में भाग लेकर अपनी क्षमताओं का परिचय दिया और प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाया।

स्पोर्ट्स वीक में आउटडोर और इंडोर खेलों का समावेश किया गया, जिनमें खो-खो, कबड्डी, हैंडबॉल, फुटबॉल, डोज़बॉल, टेबल टेनिस, कैरम और शतरंज जैसे खेल शामिल थे। साथ ही एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं में छात्रों ने शॉटपुट, भाला फेंक, 100 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़, 400 मीटर रिले रेस और रस्साकशी जैसे रोमांचक खेलों में भी अपनी प्रतिभा दिखाई।

हर खेल में छात्रों ने पूरे जोश और आत्मविश्वास के साथ प्रदर्शन किया। विभिन्न हाउसों की टीमों ने जबरदस्त प्रयास कर अपनी रणनीति और कौशल का परिचय दिया। खो-खो, कबड्डी, और फुटबॉल जैसे खेलों में प्रदर्शन ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया।

स्पोर्ट्स वीक का यह आयोजन न केवल छात्रों के शारीरिक विकास के लिए बल्कि उनके अनुशासन, टीमवर्क और खेल भावना को प्रोत्साहित करने के लिए भी बेहद सफल साबित हुआ।

सीएम राइस के छात्रों ने किया सतपुड़ा ताप विद्युत गृह का भ्रमण

सुबह सवेरे सोहागपुर। सीएम राइज शासकीय एसजेएल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सोहागपुर ने राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान रमसा के अंतर्गत व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत कक्षा 9वी ,दसवीं एवं 11वीं के छात्रों का औद्योगिक भ्रमण सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी में कराया गया ।इस भ्रमण में बच्चों के कौशल विकास के लिए थर्मल पावर प्लांट में विभिन्न प्रकार के उपकरणों की जानकारी दी गई। तथा किस प्रकार से कोयले से बिजली बनाई जाने प्रक्रिया समझाई गई। वहीं विभिन्न प्रकार के उपकरणों के मॉनिटरिंग बताई गई।इस संबंध में करियर की संभावनाओं के बारे मे प्लांट प्रबंधन द्वारा संपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर प्राचार्य राम किशोर दुबे ,व्यवसायिक प्रशिक्षक अभिषेक माझी आईटी, जितेंद्र अहिरवार इलेक्ट्रॉनिक्स और हार्डवेयर ए शिक्षक जहूर खान, बालमुकुंद पटेल, राधाकृष्णा पटेल, गौरी शंकर यादव, श्रवण कुमार शर्मा आदि उपस्थित थे।

योग शिविर की तैयारियों का लिया जायजा

भोपाल से आए सह राज्य प्रभारी ने देखी तैयारियां

बैतूल। आगामी 13, 14, 15 दिसंबर को होने वाले स्वामी परमार्थ देव जी के योग शिविर के तैयारी का जायजा लेने के लिए आज शुक्रवार को पतंजलि योग समिति के राज्य प्रभारी हरि शरण समरी बैतूल पहुंचे। उन्होंने शिविर की सफलता के लिए सभी कार्यकर्ताओं को मिलजुल कर कार्य करके इस शिविर को सफल बनाने का आह्वान किया। गौरतलब है कि बैतूल के स्टेडियम और ओपन आडिटोरियम में योग-आरोग्य शिविर विशाल स्तर पर लग रहा है। इसमें जिले भर की संस्थाओं के अलावा शासन-प्रशासन भी सहयोग कर रहा है। इस अवसर पर हितेश पटेल, लक्ष्मीकांत साहू दिनेश लिखितकर, गणेश मारवाड़ी, जितेंद्र सोनी एस पवार, मोतीलाल यादव, नारायण यादव, अनिल साहू, मनोहर साहू, सतीश पाल, रेखा पवार, मुकेश ठाकुर, सुनील कुबड़े, हरकचंद सोलंकी इत्यादि उपस्थित थे।

नपा सीएमओ ने किया शहर के वार्डो का निरीक्षण

बैतूल। नगरपालिका सीएमओ ने शहर के विभिन्न वार्डो का निरीक्षण कर व्यवस्थाएं देखी। सीएमओ सतीश मटसेनिया ने स्वच्छता निरीक्षक संतोष धनेलिया, अखिल राय के साथ सुबह लोहिया वार्ड, विनोवा वार्ड, मालवीय वार्ड, महावीर वार्ड का निरीक्षण किया। वार्ड पार्षद श्रीमती सोमती, वर्षा बारस्कर और सुपरवाइजर से मिलकर उनकी समस्या सुनी। कर्मचारियों को लाइट, जल वितरण और सफाई व्यवस्था सुधार के निर्देश दिए।

अस्पताल के सीएस डॉ. बारंगा और लैब इंचार्ज श्री नागले हुए सेवानिवृत्त

बैतूल। जिला चिकित्सालय के सिविल सर्जन डॉ. अशोक बारंगा और पैथोलॉजिस्ट और लैब इंचार्ज डॉ. डब्ल्यूए नागले शनिवार को सेवानिवृत्त हो गए। दोनों डॉक्टर जिला अस्पताल में लंबे समय से पदस्थ रहे। सेवानिवृत्त होने पर अस्पताल के डॉक्टरों और स्टाफ द्वारा विदाई दी गई। विदाई समारोह में सीएमएचओ डॉ. रविकांत उइके, डॉ. एके पांडे, डॉ. जगदीश घोरे, डॉ. रानू वर्मा, डॉ. आनंद मालवीय, डॉ. रेणुका गोहिया सहित अन्य डॉक्टर मौजूद रहे। सेवानिवृत्त हुए डॉक्टरों का शाल-श्रीफल और गुलदस्ते भेंट कर सम्मान किया गया। सेवानिवृत्त हुए दोनों डॉक्टर लंबे समय से अस्पताल में पदस्थ रहे, जिन्होंने अस्पताल में मरीजों को बेहतर सेवाएं देने का पूरा प्रयास किया। सबसे सीनियर डॉक्टर होने के कारण उन्होंने विपरित परिस्थितियों में भी अस्पताल की कमान संभाल कर अपनी सेवाएं दी। डॉ. अशोक बारंगा ने अपने सिविल सर्जन के सेवा कार्य में डॉक्टरों और स्टाफ के साथ तालमेल करके अस्पताल के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

डॉ. आयुष आर्य ने चिकित्सा के क्षेत्र में किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

एमबीबीएस में स्वर्ण पदक प्राप्त कर जिले का किया नाम रोशन

बैतूल। पूर्व विधायक अलकेश आर्य के सुपुत्र डॉ. आयुष आर्य ने चिकित्सा क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए एमबीबीएस में स्वर्ण पदक प्राप्त कर परिवार और क्षेत्र का नाम गौरवान्वित किया है। एमजीएम मेडिकल कॉलेज इंदौर में 29 नवंबर को आयोजित अकादमिक उत्कृष्टता पुरस्कार समारोह में डॉ. आयुष को प्रसूति एवं स्त्री रोग में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, उन्होंने नेत्र विज्ञान, ईएनटी, प्रिवेंटिव एंड सोशल मेडिसिन तथा बाल रोग विषयों में विशिष्ट स्वर्ण पदक भी प्राप्त किए। वर्तमान में डॉ. आयुष नागपुर के सरकारी मेडिकल कॉलेज में एमडी रेडियोडायग्नोसिस के तीसरे वर्ष के छात्र हैं और अपने अध्ययन के साथ चिकित्सा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। उनकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर परिवार, शिक्षकों और शुभचिंतकों ने उन्हें शुभकामनाएं दीं।

हम होंगे कामयाब पखवाड़े के तहत कानूनी जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में जेंडर आधारित हिंसा की रोकथाम के लिए 25 नवंबर 2024 से जागरूकता अभियान प्रारंभ किया गया है, जो आगामी 10 दिसंबर 2024 तक चलेगा। हम होंगे कामयाब पखवाड़े के तहत शनिवार को जामठी के शासकीय हाई स्कूल एवं आंगनवाड़ी सेक्टर क्रमांक-2 में पॉक्सो एक्ट, घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 संबंधित कानून जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। वन स्टाप सेंटर प्रशासक श्रीमती अर्चना तिवारी द्वारा वन स्टाप सेंटर की कार्यप्रणाली एवं शासन की बाल आशीर्वाद स्पांसरशिप योजना की जानकारी दी गई। साथ ही वन स्टाप सेंटर काउंसलर शिखा भौरासे के द्वारा पाक्सो एक्ट, साइबर सुरक्षा की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम में घरेलू हिंसा अधिनियम तथा हेल्पलाइन नंबर की जानकारी की दी गई।

पीएचई मंत्री ने किया सापना बोट क्लब का भ्रमण, सतपुड़ा की सुरम्य वादियों को निहारा

जिले में जल पर्यटन के क्षेत्र में सापनाजलाशय को विकसित करने की सराहना की

बैतूल। जिले में पर्यटन के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं, सापना बोट क्लब के माध्यम से लोगों को प्रकृति से जुड़ने का बड़ा अवसर प्राप्त होगा। केंद्र एवं प्रदेश की सरकार पर्यटन की दिशा में विभिन्न कार्य कर रही है। इससे लोगों को जहां रोजगार प्राप्त होगा वहीं आर्थिक रूप से प्रदेश समृद्ध होगा। यह बात मध्यप्रदेश की लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री संपतिया उइके ने शनिवार को सापना बोट क्लब का भ्रमण करने के दौरान चर्चा में कही। पीएचई मंत्री के सापना जलाशय पर पर्यटन के लिए प्रारंभ की गई गतिविधियों का जायजा लेने के लिए पहुंचने पर सापना बोट क्लब के संचालकों ने उनका पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। मंत्री ने पूरे क्षेत्र का भ्रमण किया एवं सापना जलाशय, सतपुड़ा की सुरम्य वादियों को निहारने के साथ ही पर्यटन के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

इस दौरान संचालक अतुल शुक्ला ने उन्हें जानकारी दी कि बोट क्लब के साथ ही रिसोर्ट का निर्माण भी किया जा रहा है। इससे यहां पर आने वालों को ठहरने की सुविधा भी प्राप्त होने लगेगी। प्रदेश ही नहीं बल्कि देश के विभिन्न हिस्सों से यहां पर आने वालों को कार्यक्रमों का आयोजन करने के लिए तमाम सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी। सापना जलाशय में लोग जल पर्यटन का आनंद उठाने के लिए बड़ी संख्या में पहुंच रहे हैं। पीएचई मंत्री संपतिया उइके ने संचालकों को पर्यटकों की सुविधाओं में विस्तार करने के लिए सुझाव भी दिए।

उल्लेखनीय है कि पर्यटन विभाग के माध्यम से सापना जलाशय में बोट क्लब एवं रिसोर्ट की सुविधा प्रदान की गई है।आने वाले समय में सापना बोट क्लब एवं रिसोर्ट जिले ही नहीं बल्कि देश भर के लोगों के लिए सतपुड़ा की सुरम्य वादियों के बीच ठहरने, निहारने का प्रमुख केंद्र बन जाएगा। इस दौरान अतुल शुक्ला, श्रद्धा शुक्ला, पप्पी शुक्ला, अमर सिंह,निलेश रघुवंशी समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

ना बच्चे खेल पा रहे न लोग घूम पा रहे..!

नर्मदापुरम। खेल मैदानों की दुर्दशा को लेकर लोग अब परेशान हो उठे, नगर के खेल मैदान को लेकर उनमें जागरूकता दिखाई दी, जिन्होंने सीएम हेल्पलाइन में शिकायत कर उनकी हालत सुधारने की गुजारिश की है। कहा जा सकता है कि नगर में नाकाबिल जनप्रतिनिधि और गैर जिम्मेदार अधिकारियों का नगर की व्यवस्था की ओर ध्यान देना बंद कर दिया उनमें खेल मैदान भी शामिल हैं। उसका सीधा असर आम आदमियों पर दिखाई देता है जिन्हें भांति भांति से कष्ट उठाना पड़ रहा, नगर के कुछ बड़े खुले रकबे जिन्हें खेल मैदानों के नाम पर पहचान मिली पर बच्चे खेल लेते और लोग घूम फिर लिया करते थे अब दोनों लगभग लगभग खत्म हो चले, जो शराब खोरी, असमाजिकता, आवारागर्दी का केंद्र बन गये, इस ओर जिम्मेदार ध्यान नहीं देते ऐसे में सवाल उठता है कि डेढ़ लाख आबादी वाले नगरवासी जिनमें बच्चे बूढ़े सभी शामिल हैं वे घूमने, फिरने से लेकर खेलने कूदने कहां जाएं..? जनप्रतिनिधियों सहित नगर के जिम्मेदार अधिकारियों के लिए यह शर्म की बात है लेकिन वे नगर व्यवस्था की ओर ध्यान नहीं देना अपने लिए जैसे गौरव का विषय मानते है। गुप्ता ग्राउंड जो कभी खुला खुला प्राकृतिक मनोरम से भरपूर और नगर के लिए शान हुआ करता था, रामजी

बाबा मेला नगरवासियों के लिए मनोरंजन स्थल था तो एक बड़ा खुला खेल मैदान के रूप में बच्चों और खिलाड़ियों को प्रिय था पर नगरपालिका ने चारों ओर घेर कर स्टेडियम का नाम देकर आय का साधन तो बना लिया लेकिन उसकी देखरेख से पल्ला झाड़ आय का साधन बना कर उसे लावारिस हाल में छोड़ दिया, नगर के बीच इस जगह ना तो बच्चे खेल पा रहे और ना लोग घूम पा रहे। नगरपालिका इसके टूट चुके गेट की दुरुस्त नहीं करा रही और ना इसकी साफ सफाई, जो शराबियों का अड्डा और शाम को बार बन जाता। बच्चों को खेलने और लोगों को घूमने में हो रही है मुख्यमंत्री हेल्पलाइन पर शिकायत करने वालों में एडवोकेट अनंत तिवारी, कृष्ण कुमार चौकसे, ब्रिजेश मिश्रा, सत्यम अदालिया, प्रताप ठाकुर, बाबा चौकसे, शफीक खान, संजय चौकसे, गोपाल चौरे आदि है। बताया जा रहा है कि मामला नपा उपाध्यक्ष अभय वर्मा के वार्ड का होने के बावजूद नपा उपाध्यक्ष खुद एक खेल मैदान की व्यवस्था पर ध्यान नहीं देते हैं।

आत्महत्या को उकसाने वाले आरोपियों को 05-05 वर्ष का कठोर कारावास

सुबह सवेरे सोहागपुर

द्वितीय अपर सत्र न्यायाधीश श्री सुरेश कुमार चौबे की अदालत ने आत्महत्या के दुष्प्रेरित करने वाले चार आरोपियों को धारा 306 भादवि की धारा में 05.05 साल के कठोर कारावास एवं दो हजार पांच , पांच सौ रुपए के अर्थदंड से दंडित किया है। घटना का संक्षिप्त विवरण में अपर लोक अभियोजक सोहागपुर शंकरलाल मालवीय ने बताया कि घटना दिनांक 05 जुलाई 2021 को आहत अभिषेक मसीहा को उसके पिता द्वारा जहरीला पदार्थ खा लेने के कारण इलाज के लिए सामुदायिक स्वस्थ केन्द्र सोहागपुर लेकर आया था।इसकी सूचना डॉक्टर ने सोहागपुर थाना में दी थी। प्राथमिक उपचार के पश्चात आहत अभिषेक की मृत्यु पूर्व कथन लेख कर अग्रिम उपचार हेतू जिला अस्पताल नर्मदापुरम भेजा गया था। दिनांक 07 जुलाई 2021 को इलाज के दौरान अभिषेक की न्यू पाण्डे अस्पताल नर्मदापुरम में मृत्यु हो गई थी जिसकी सूचना थाना कोतवाली नर्मदापुरम को दी गई थी। इसी आधार पर मर्ग कायम करके जांच की गई । मृतक का पोस्टमार्टम कराया गया था। पोस्टमार्टम के पश्चात मृतक का बिसरा

जप्त किया गया था। मर्ग जांच डायरी थाना सोहागपुर को प्राप्त होने पर असल मर्ग जांच की गई । जाँच के दौरान मृतक का सुसाईट नोट जप्त किया गया । तथा साक्षीयों के कथन लेख बन्द किए गए ।इससे मालूम हुआ कि दिनांक 04 जुलाई 2021 को करीब 5.30 बजे सोनू उर्फ विनोद महोरिया, अर्जुन चौहान, सौरभ उर्फ छोटू बहौत्रा, बुटा मेहतर एवं उनके अन्य साथीयों के द्वरा मृतक अभिषेक मसीह के साथ मारपीट की थी ।उक्त मारपीट के सबंध में मृतक ने मामले की रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। उक्त मारपीट की घटना से मानसिक तनाव में आकर मृतक ने दिनांक 05 जुलाई 2021 को फसल में डालने वाली जहरीला दवाई पीली थी। इस कारण इलाज के दौरान मृत्यु हो गई थी। उक्त मर्ग जाँच के आधार पर आरोपीगणों के विरुध्द थाना सोहागपुर ने अपराध क्रं. 289 ,2021 धारा 306,34 भादवि के अन्तर्गत प्रकरण पंजीबध्द करके विवेचना में लिया था । विवेचना पूर्ण करके आरोपीगण के विरुध्द माननीय न्यायालय सोहागपुर में अभियोग पत्र प्रस्तुत किया गया था। विचारण के दौरान अभियोजन की ओर से प्रस्तुत साक्ष्य एवं तर्कों के आधार पर सहमत होते हुए

विद्वान द्वितीय अपर न्यायाधीश सुरेशकुमार चौबे की अदालत ने आरोपीगणों सोनू उर्फ विनोद पिता अशोक महोरिया,अर्जुन चौहान पिता श्रीराम चौहान, सौरभ उर्फ छोटू पिता मदनलाल बहौत्रा, चंदन पिता चैनसिंह रघुवंशी को पांच पांच साल के कठोर कारावास एवं दो हजार पांच पांच सौ रुपए के अर्थ दंड से दंडित किया है। विचारण के दौरान अभियुक्त बूटा उर्फ राजीव दोहरे की मृत्यु हो गई थी ।शासन की ओर से अपर लोक अभियोजक सोहागपुर शंकरलाल मालवीय ने प्रकरण में सशक्त पैरवी की थी।

लंबे अरसे बाद राखी फिर परदे पर

राखी अपने ज़माने की बेहद लोकप्रिय हीरोइन रही है। अमिताभ बच्चन के साथ उन्होंने कई हिट फ़िल्में दी। लेकिन, करीब 21 साल से परदे से बाहर हो गई। क्योंकि, उन्होंने फिल्मों में काम करना दिया था। लेकिन, अब वे बंगाली फिल्म 'अमंर बॉस' से वापस परदे पर हैं। उन्होंने बताया कि कैसे एक दिलचस्प कहानी ने उन्हें वापसी के लिए प्रेरित किया! वे सिर्फ कहानी सुनने के लिए राजी हुई थी, पर जब कहानी सुनी तो उन्हें लगा कि ये फिल्म तो करने लायक है।

गुजरे जमाने की अभिनेत्री राखी ने 'इफ्फी 2024' में अपनी नई फिल्म 'अमर बॉस' के प्रीमियर में हिस्सा लिया। इसे भारतीय पैनोरमा के तहत चुना गया था। इस कार्यक्रम के दौरान उन्होंने अपने अभिनय में वापसी के फैसले, निर्देशक के साथ अपने तालमेल और सिनेमा की दुनिया में हो रहे बदलावों पर अपने विचार साझा किए। बातचीत में राखी ने लंबे समय बाद फिल्म करने के अपने अनुभव को साझा करते हुए बताया कि कैसे एक दिलचस्प कहानी ने उन्हें अभिनय में वापसी करने के लिए प्रेरित किया। राखी गुलजार ने फिल्म इंडस्ट्री में वापसी पर बात करते हुए कहा कि सच में काफी समय हो चुका है। मैंने चुपचाप देखा कि मेरे बहुत से समकालीन कलाकार, जिनके साथ मैंने पहले काम किया था, हमें छोड़कर चले गए, लेकिन साथ ही नई पीढ़ी के कलाकार भी उभरकर सामने आए।

एक दिन शिबू (शिबोप्रसाद मुखर्जी) ने कहा कि वह स्क्रिप्ट के साथ उनसे मिलना चाहते हैं। मैंने साफ कहा कि मैं अब फिल्मों में अभिनय नहीं करूंगी। हालांकि, वह मुझे इतनी स्नेह भावना से कहानी सुनाने की इच्छा व्यक्त की कि मैं सहमत हो गई। उन्होंने कहा कि फिल्म का विषय और पात्र बहुत दिलचस्प थे और मैं आत्मविश्वास से कह सकती हूं कि इस फिल्म की कहानी वरिष्ठ नागरिकों और कामकाजी महिलाओं को काफी पसंद आएगी। वे इसे अच्छे से महसूस कर पाएंगे। राखी ने फिल्म के निर्देशक और अभिनेता शिबोप्रसाद मुखर्जी के साथ स्क्रीन स्पेस शेयर करने के अनुभव को भी साझा किया। उन्होंने कहा कि वह फिल्म में मेरे बेटे का किरदार निभा रहे हैं और वह किरदार बहुत वास्तविक है, लेकिन मां-बेटे के रिश्ते में एक कड़वाहट भी है।

शिबू एक निर्देशक के रूप में बहुत शांत और सलीके से काम करवाते हैं और मुझे लगता है कि यह उनकी सबसे बड़ी ताकत है।

अपनी वापसी को लेकर राखी ने कहा कि मैं काफी हद तक यहीं थी, मेरी बेटी

फिल्म बना रही है, मैं नए कलाकारों और समकालीनों के संपर्क में हूं, मैं पूरी तरह से इंडस्ट्री में हूं। लेकिन हां, एक अभिनेत्री के रूप में फिल्म का चयन अंदर से आना चाहिए। कोई मुझे फिल्म करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। मुझे स्क्रिप्ट पसंद आई, मैंने इसे करना चाहा और इसलिए मैंने इसे किया। मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात फिल्म का विषय और कहानी होती है। मुझे यह फिल्म बहुत पसंद आई। फिल्म की निर्देशक नंदिता रॉय ने राखी गुलज़ार के साथ काम करने को लेकर अपना उत्साह साझा करते हुए कहा कि राखी दी के साथ काम करना मेरे लिए एक सपने के सच होने जैसा है। उनकी कृपा, प्रतिभा और अपनी कला के प्रति समर्पण ने मुझे हमेशा प्रेरित किया है। उनके साथ काम करना जारी रहेगा।

'अमर बॉस' एक समृद्ध अनुभव रहा और मैं इस कहानी को उसके साथ जीवंत करने का अवसर देने के लिए आभारी हूं। 'अमर बॉस' एक दिल छू लेने वाली कहानी है, जो घर और काम की जगह रिश्तों की गतिशीलता को संवेदनशीलता और अंतर्दृष्टि के साथ पेश करती है। सरबंती चटर्जी, सौरसेनी मैत्रा जैसे कलाकारों से युक्त एक शानदार कलाकार के साथ। 'अमर बॉस' में टेलीविजन अभिनेता श्रुति दास और गौरव चटर्जी भी हैं। एक अभिनव कहानी और नंदिता रॉय और शिबोप्रसाद मुखर्जी की रचनात्मक दृष्टि के साथ, 'अमर बॉस' दर्शकों को लुभाने और एक स्थायी छाप छोड़ने की उम्मीद करता है। गौरतलब है कि हाल ही में बड़े पर्दे पर फिल्म करण-अर्जुन को दोबारा रिलीज किया गया है। इस फिल्म में राखी ने सलमान खान और शाहरुख खान के साथ मुख्य भूमिका निभाई थी।

प्रभास को बेटा बनाना चाहती हैं जरीना वहाब

बॉलीवुड एक्टर आदित्य पंचोली की पत्नी जरीना वहाब लगातार सुर्खियों में बनी हुई है। जरीना ने एक इंटरव्यू दिया था। इसमें जरीना वहाब ने कंगना रनौत से लेकर जिया खान तक का जिक्र किया। इस दौरान जरीना वहाब अपने बेटे और पति की तरफदारी करती नजर आईं। इस दौरान जरीना कई और मुद्दों पर भी अपनी राय रखती नजर आईं। बातों ही बातों में जरीना वहाब ने इस बात का खुलासा कर दिया है कि वो बॉलीवुड एक्टर प्रभास की मां बनना चाहती हैं। ये बयान देते हुए जरीना वहाब ने अपनी एक वजह भी फैंस को बताई। इंटरव्यू के दौरान उन्होंने कहा कि अगले जन्म में मैं प्रभास और सूरज दो बेटों की मां बनना चाहूंगी। असल जिंदगी में प्रभास बहुत ही बेहतरीन इंसान है। मैंने प्रभास के साथ काम किया है।

प्रभास की तारीफ करते हुए जरीना वहाब ने कहा कि वो सेट पर हर किसी का ख्याल रखते हैं। मैंने आज तक उसके जैसा लड़का नहीं देखा। काम खत्म होते ही वो अपनी टीम से मिलने आते हैं। बाय बोले बिना प्रभास अपने घर नहीं जाते। अगर सेट पर कोई भूखा है, तो प्रभास घर से उसके लिए खाना भिजवाते हैं। आज की जनरेशन को प्रभास से सीख लेनी चाहिए। उनको

पता है कि बड़ों का सम्मान कैसे किया जाता है। वो बहुत ही विनम्र हैं। काश वो मेरे बेटे होते।

प्रभास इस समय अपनी फिल्म 'द राजा साब' में व्यस्त चल रहे हैं। पीपल मीडिया फैक्ट्री के बैनर तले बनी इस फिल्म को हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ जैसी 5 भाषाओं में रिलीज किया जाना है। ये फिल्म 10 अप्रैल 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देती। फिल्म में प्रभास के साथ निधि अग्रवाल और मालविका मोहनन भी नजर आने वाली है। फैंस प्रभास की इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

रियल बॉक्स

कुछ फ़िल्में जो बिगड़ा मूड सुधार दें!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

आजकल मूड ख़राब होना भी एक बीमारी है। ये वो बीमारी है जिसका कोई एक कारण नहीं होता और न एक होता है। वही जानता है कि मूड कैसे ठीक होगा। इस बीमारी का सबसे बड़ा लक्षण है दिल उदास होना। ऐसे में कुछ भी अच्छा नहीं लगता। लेकिन, फिल्म ऐसी चीज है जो मूड ठीक करके दिल खुश करने में देर नहीं करती। लेकिन, हर फिल्म ख़राब मूड का इलाज नहीं होती। मूड ख़राब हो, तो ठीक करने के लिए भी कैसी फिल्म देखी जाए कि मूड फ्रेश हो। क्योंकि, सभी फ़िल्में इस स्तर की होती भी नहीं है कि उनसे मूड ठीक हो! इसके लिए कुछ अलग तरह की फ़िल्में देखी जाना चाहिए। जब फ़िल्म अलग होगी, तभी उस बीमार का ध्यान बंटेगा और मनोरंजन होगा। मारधाड़, बदले की कहानियां, प्रेम कहानियों वाली फिल्मों से चंद समय मन बहलाव होता है, पर ये फ़िल्में मूड दुरुस्त नहीं करती। वैसे आजकल ऐसी कई फिल्में बन रही हैं, जिनके कथानक काफी अलग होते हैं।

फिल्मकार मनोरंजन के लिए बहुत से प्रयोग करते हैं। भागदौड़ भरी जिंदगी में आजकल स्ट्रेस किसे नहीं होता। लेकिन, महत्वपूर्ण यह है कि आप उसे किस तरह हैंडल करते हैं। फेहरिस्त में कुछ ऐसी कमाल की फ़िल्में हैं, जो न सिर्फ जीने का तरीका सिखाती हैं, बल्कि जिंदगी की समस्याओं को एक अलग नजरिए से देखने में भी मदद करती है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव किसे नहीं होता। किसी को नौकरी या कारोबार का तनाव है, तो कोई पारिवारिक समस्या से परेशान है। कोई पैसों की तंगी से दुखी है तो किसी को ऑफिस का स्ट्रेस मारता है। ऐसी स्थिति में कुछ फिल्में दिल को सुकून देती हैं। कई बार ऐसी फिल्मों से कोई ऐसा आइडिया मिल जाता है, जो दर्शकों की समस्या का निराकरण करता है। अलग तरह की फ़िल्में वे होती है, जो जिंदगी को नई राह दिखाती है। सब कुछ ठीक नहीं चल रहा, तो ऐसी फिल्में जरूर देखनी चाहिए, जो न सिर्फ तनाव कम करें, बल्कि जीने और खुश रहने की कला भी सिखाए।

ऐसी ही एक फिल्म है 'डियर जिंदगी' जो एक बार जरूर देखनी चाहिए। शाहरुख खान और आलिया भट्ट की यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कोई खास जादू नहीं चला सकी। लेकिन, समीक्षकों ने इसे बेहतरीन फिल्मों में शामिल किया। कई बार अपने ऑफिस स्ट्रेस और निजी जिंदगी में चल रही नेगेटिविटी से लोग इतने परेशान हो जाते हैं कि उनके दिलो-दिमाग में उल्टे-सीधे ख्याल आने लगते हैं। फिल्म में शाहरुख़ का किरदार मनोचिकित्सक का है। इस नजरिए से फिल्म में शाहरुख खान का बोला हर डायलॉग यादगार है। आमिर खान अभिनीत '3 इडियट्स' भी ऐसी ही फिल्म है, जो जीवन को नई दिशा दिखाती है। क्योंकि, जिंदगी में किसी ऊंचाई पर पहुंचने और धन कमाने का दबाव दुनिया का सबसे बड़ा तनाव में से एक है। फिल्म के कथानक के मुताबिक, रचनात्मकता और जिज्ञासा से भरे सवाल जिंदगी की पढ़ाई बर्बाद कर देती है। उन्हें असली शिक्षा जिंदगी और करियर के नजरिए से मिलना चाहिए। यह बात आमिर खान की फिल्म '3 इडियट्स' यही बात बताती है।

ऐसी ही एक फिल्म है 'जिंदगी न मिलेगी दोबारा' जिसके मुख्य कलाकार रितिक रोशन, फरहान अख्तर और अभय देयोल हैं। यह फिल्म असल में उन लोगों के लिए है, जो पढ़ लिखकर कामयाब तो हो गए, पर हमेशा चूहा दौड़ में लगे रहते हैं। यह फिल्म कुछ ऐसे दोस्तों की कहानी है जिनमें से एक अपने बाकी दोस्तों की जिंदगी और एक मजेदार सफर के दौरान लाइफ का असली मतलब सीखता है। एक दिल खुश पर अंत में शिक्षा देने वाली फिल्मों में एक 1971 में आई 'आनंद' भी है। अमिताभ बच्चन और राजेश खन्ना की यह फिल्म ऐसे व्यक्ति पर केंद्रित है, जिसकी जिंदगी में अब बस चंद दिन शेष हैं। वे एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित हैं, लेकिन फिर भी वो अपने आखिरी वक्त को खुलकर जीता है और निराशा में आशा के रंग भरते हुए दुनिया को जीने की कला सिखाता है।

कंगना रनौत की फिल्म 'क्वीन' 2013 में आई थी। यह फिल्म ऐसी लड़की की कहानी है, जिसे उसका मंगेतर शादी के चंद दिन पहले धोखा दे देता है। लेकिन, हनीमून की टिकट बुक हो चुकी होती है, तो कंगना (रानी) इन पैसों को बर्बाद करने के बजाए अकेले ही हनीमून पर जाने का फैसला करती है। अकेले हनीमून का उसका तजुर्बा उसे एक नया नजरिया देता हैं। ऐसी ही खुशनुमा फिल्म 'उड़ान' भी है, जो ओटीटी प्लेटफॉर्म पर देखी जा सकती है। ये फिल्म बताती है कि कई बार जिंदगी में ऐसी चुनौतियां सामने आती है, जिनमें सख्त फैसले लेना मजबूरी हो जाता है। ये फिल्म एक फैमिली ड्रामा है। 'लापता लेडीज' भी दो लड़कियों के इर्द-गिर्द घूमती है, जो शादी के बाद दुल्हन बनकर ससुराल जाती हैं, पर घूंघट में उनकी अदला-बदली हो जाती है। एक का नाम फूल होता है, दूसरी पुष्पा होती है। फूल अपने ससुराल का नाम तक नहीं जानती। जबकि, पुष्पा अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए भाग जाना चाहती है। अंत में दोनों ही अपने-अपने मकसद में कामयाब हो जाती हैं।

सलमान खान, आमिर खान, रवीना टंडन और करिश्मा कपूर की फिल्म 'अंदाज अपना अपना' इतिहास में दर्ज फिल्म है। इस फिल्म की कॉमेडी ने अपने समय पर दर्शकों को लोटपोट कर दिया था। न सिर्फ कॉमेडी बल्कि फिल्म में क्यूट लव स्टोरी भी देखने को मिलती है। शक्ति कपूर और परेश रावल भी अहम किरदार में थे। इसके अलावा संजय दत्त की फिल्म 'मुन्नाभाई एमबीबीएस' भी एक बेहतरीन कॉमेडी फिल्म है। इसमें संजय दत्त का एक अलग ही अंदाज देखने को मिला था। मुन्ना भाई यानी संजय दत्त के साथ अरशद वारसी सर्किट की जोड़ी दर्शकों को खूब पसंद आई। फिल्म जहां हंसाती है, वहीं कई जगहों पर भावुक भी कर देती हैं। 2005 में आई 'गरम मसाला' में अक्षय कुमार और जॉन अब्राहम की जोड़ी थी। परेश रावल और राजपाल यादव का भी अहम किरदार था। फिल्म में अक्षय और जॉन अब्राहम तीन एयर होस्टेस के चक्कर में पड़ जाते हैं और फिर जोरदार कॉमेडी होती है। सलमान खान, अनिल कपूर, फरदीन खान, बिपाशा बसु और लारा दत्ता की फिल्म 'नो एंट्री' को देखकर दर्शकों का हंसी रोकना मुश्किल हो जाता है। फिल्म का एक डायलॉग 'रिलायंस की कसम' तो आज भी कई बार लोग बातों बातों में कह देते हैं।

डरावनी फिल्मों को मनोरंजन की गिनती में कम ही लोग लेते हैं। लेकिन, अब ऐसी फ़िल्में बनाने का अंदाज बदल गया। जब से हॉरर के साथ कॉमेडी को जोड़ा गया, इन फिल्मों के कथानक बदल गए। पहले इन फिल्मों में बड़े नामचीन कलाकार काम नहीं करते थे, पर अब राजकुमार राव, श्रद्धा कपूर और कार्तिक आर्यन से लगाकर अक्षय कुमार भी दिखाई देने लगे। सिनेमा की दुनिया में हॉरर फिल्मों को दोयम दर्जे का माना जाता रहा है। मगर, कुछ सालों में सस्ते सिनेमा के रूप में जाना जाना वाला ये जॉनर लोकप्रिय होने लगा। मूड फ्रेश करने के लिए ऐसे कथानकों की फ़िल्में देखे जाने जरूरत इसलिए महसूस की जाने लगी, कि ये दर्शकों को ये अलग दुनिया में ले जाती है। स्त्री, मुंज्या और 'स्त्री 2' के बाद 'भूल भुलैया' सीरीज के बॉक्स ऑफिस आंकड़ों के बाद अब हॉरर कॉमेडी को भी मूड बदलने वाली फिल्मों के रूप में जगह मिलने लगी।

कुछ दशक पहले तक हॉरर फिल्मों का एक लंबा दौर रहा। दो गज जमीन के नीचे, वीराना, पुराना मंदिर, बंद दरवाजा जैसी डरावनी फिल्मों का अलग ही दर्शक वर्ग था। इस तरह की हॉरर फिल्मों में कुछ ऐसे दृश्य पिरोए जाते थे जो दर्शकों को बांधकर रखते थे। मगर कोई भी इन इन फिल्मों को परिवार के साथ देखना पसंद नहीं करता। मगर कुछ सालों में हॉरर कॉमेडी में आए नए कथानक ने इन्हें मनोरंजक फिल्मों का दर्जा दे दिया। हॉरर और कॉमिक फिल्मों को हमेशा ही पसंद किया जाता रहा है। जब दर्शकों को हॉरर और कॉमेडी का कॉम्बिनेशन मिला, तो उसे दर्शकों ने हाथों-हाथ हाथ लिया। फिल्मकार अमर कौशिक की 'स्त्री' से इसकी शुरुआत हुई। फिल्म ने आज से पांच साल पहले 180 करोड़ से ज्यादा का बिजनेस किया था और उसके बाद तो हॉरर कॉमेडी का सिलसिला चल निकला। अब दिल खुश करने वाली फिल्मों की श्रेणी में ऐसी फ़िल्में भी शामिल की जाने लगी। यदि दिल उदास है और मूड बदलना चाहते हैं, तो देखिए कुछ ऐसी फ़िल्में तो रूटीन से अलग हों!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

गीतों के रचे जाने की भी अलग ही दास्तान

अशोक जोशी

फिल्मों के गीत कथानक में दिए गए सीन के हिसाब से लिखे जाते हैं। लेकिन, गीतकारों के लिए ये हमेशा आसान नहीं होता। कई बार गीतकारों को सीन के मुताबिक गीत रचना में बहुत मुश्किल

आती है। उन्हें वो सही शब्द नहीं सूझते, जो सीन के भावों को व्यक्त कर सकें। ऐसे कई किस्से हैं, जो बताते हैं कि गीतकारों को बातचीत में ही कई बार ऐसे शब्द मिल जाते हैं, जो उनके लिए रास्ता आसान बना देते हैं। ऐसे कई लोकप्रिय गीत हैं, जो अचानक रचे गए।

हिंदी फिल्मों में गीतों की अनिवार्यता किसी से छुपी नहीं है। ऐसे में गीतकारों के लिए अलग-अलग सिचुएशन के लिए गीत लिखना किसी चुनौती से कम नहीं होता। आमतौर पर हिन्दी फिल्मों के गीतों में या तो नायक गीतों के माध्यम से नायिका की खूबसूरती का राग अलापता है या उससे प्रणय निवेदन करता है। नायिका भी गानों के माध्यम से या तो अपनी मजबूरी या प्रेम जाहिर करती है या विरह गीत गाते हुए नायक का इंतजार करती है। इन एकल गीतों से अलग होते हैं युगल गीत जो नायक-नायिका के प्रेम प्रसंग को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। वैसे तो हर तरह के गीतों में लोकप्रियता के कुछ न कुछ तत्व होते हैं। लेकिन, हिन्दी फिल्मों का इतिहास बताता है कि जिन युगल गीतों में नायक और नायिका में बोलचाल का प्रसंग होता है या संवाद, वाद-विवाद या सवाल जवाब होता है वह अन्य गीतों की तुलना में ज्यादा लोकप्रिय होते हैं।

इस तरह के गीतों की रचना भी यूं ही जाने-अनजाने हो जाती है। आन मिलो सजना का गीत 'अच्छा तो हम चलते हैं' ऐसा ही गीत है जिसकी रचना अनायास आनंद बक्षी और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल की बातचीत के दौरान हुई। इस सिचुएशन के लिए राजेश खन्ना और आशा पारेख पर फिल्माए जाने वाले गीत के बोल के लिए आनंद बक्षी को शब्द नहीं सूझ रहे थे। बार-बार लक्ष्मी-प्यारे के साथ उनकी सीटिंग होती और कोई हल नहीं निकलता था। एक शाम जब लक्ष्मीकांत वापस लौटते हुए बोले 'अच्छा तो हम चलते हैं।' बस, इसी को पकडकर आनंद बक्षी ने इस लोकप्रिय गीत के बोल लिख डाले! बॉबी के गीत 'झूठ बोले कौआ काटे' के गीतकार विट्ठल भाई पटेल थे।

लेकिन, इसके मुखड़े का श्रेय राजेन्द्र कुमार को जाता है। फिल्म 'संगम' के दौरान एक दोपहर जब वे स्विट्ज़रलैंड में राजकपूर को यह कहकर उठाने गए कि दोपहर हो गई है! तब राजकपूर ने कहा 'क्यों झूठ बोल रहे हो' तब राजेन्द्र कुमार ने कहा 'झूठ बोले कौआ काटे।' यह बात राजकपूर के ज़हन में थी, जो 'बॉबी' का लोकप्रिय गीत बनकर जन्मी!

गीतकार शैलेन्द्र की फिल्म 'तीसरी कसम' का गीत 'पान खाए सैंया हमारो, मलमल के कुर्ते पे छींट लाल लाल' का सृजन भी कम अचरज भरा नहीं था। संगीतकार शंकर जयकिशन की इस रचना के बोल एसडी बर्मन के पहनावे और हावभाव को लेकर लिखे गए थे। सचिन दा हमेशा ही मलमल का कुर्ता पहनते थे और उनके मुंह में पान होता था। जब वे बोलते, तो उनके मुंह से पान के बारीक छींटे उड़कर उनके कुर्ते पर आ जाते थे। इसे देखकर शैलेन्द्र ने कहा था 'पान खाए सैंया हमारे, सांवरिया सूरत और होंठ लाल, हाय हाय मलमल का कुर्ता और मलमल के कुर्ते पर छींट लाल लाल!'

यह तो हुई गीतो के बोल की बात! लेकिन, जिन गीतों में नायक और नायिका के बीच संवाद हुआ वह गीत बहुत ज्यादा लोकप्रिय हुए हैं। मसलन 'एक सवाल मैं करूं, एक सवाल तुम करो' और 'चली से चली रे गोरी पनिया भरन को' इन गीतों के मामले में देव आनंद का कीर्तिमान शायद ही कभी टूट पाए! क्योंकि, उनके और नायिका के बीच संवाद पर सबसे ज्यादा गीत बने और लोकप्रिय भी हुए। 1948 में प्रदर्शित उनकी पहली सफल फिल्म में किशोर कुमार और लता का गीत 'ये कौन आया रे' बहुत सफल हुआ। उसके बाद 1951 में फिल्म 'सनम' में देव आनंद और सुरैया पर फिल्माया ऐसा ही बातचीत का गाना फिल्म की सफलता का कारण बना। एक साल बाद फिल्म 'जाल' में देव आनंद और गीता बाली पर फिल्माया गीत 'चोरी चोरी मेरी गली आना है बुरा' और 'दे ही चुके हम दिल नजराना' भी बेहद लोकप्रिय हुए।

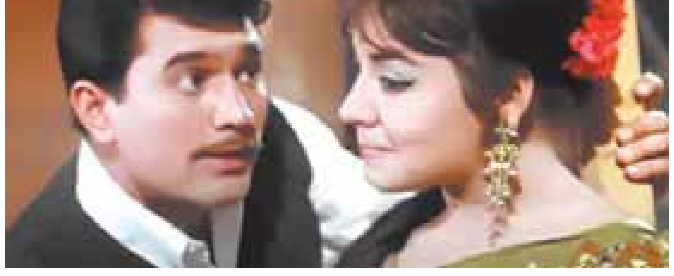

1956 में आई 'फंटूश' का गीत 'हमें किसी पर डोरे डालने हैं' भी ऐसा ही लोकप्रिय गीत था। फिल्म 'नौ दो ग्यारह' का गीत 'आंखों में क्या जी रुपहला बादल' फिल्म 'काला पानी' का 'अच्छा जी मैं हारी पिया मान जाओ ना' फिल्म 'हम दोनों' का 'अभी ना जाओ छोडकर' फिल्म 'तेरे घर के सामने' के दो गीत 'देखो रूठा न करो' और 'एक घर बनाऊंगा तेरे घर के सामने' फिल्म 'तीन देवियाँ' का 'ए यार मेरी तुम भी हो गजब' फिल्म 'महल' का 'ये दुनिया वाले पूछेंगे' फिल्म 'हरे राम हरे कृष्ण' का 'कांची रे कांची रे' फिल्म 'ज्वेल थीफ' का 'अभी ना जा मेरे साथी' फिल्म यह गुलशन हमारा' का गीत 'गोरी गोरी गांव की गोरी रे' फिल्म 'तेरे मेरे सपने' के दो गीत 'ली मैने कसम ली' और 'जीवन की बगिया महकेगी' फिल्म 'जॉनी मेरा नाम' का गीत 'ओ मेरे राजा, जाने मन को की गल है' और फिल्म 'अमीर गरीब' का 'बैठ जा बैठ गई' जैसे कई गीत है जिनमें देव आनंद अपनी नायिका से संवाद करते हुए गीत गाते-गाते लोकप्रिय हुए।

देव आनंद परम्परा को आगे बढाने वाले राजेश खन्ना ने भी ऐसा ही संवाद गीतों के माध्यम से पर्दे पर रचा है। अच्छा तो हम चलते हैं, कहो सुनो सुना कुछ हुआ क्या, मैं एक चोर तू मेरी रानी, यूं ही तुम मुझे बात करती हो, गोरे रंग पर इतना गुमान न कर, मैने देखा तूने देखा, भीगी-भीगी रातों में और हम दोनो दो प्रेमी, छुप गए सारे नजारे, गुनगुना रहे भंवरे और 'बागों में बहार है' जैसे दर्जनों गीतों में राजेश खन्ना ने बातों बातों में नायिकाओं के दिल चुराने के साथ साथ दर्शकों के पैरो को भी खूब थिरकाया। बातचीत की इसी परम्परा के गीतों में मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा, बोल मेरी तकदीर में क्या है, तुम रूठी रहो मैं मनाता रहूं, दिन सारा गुजारा तेरे अंगना, बोल दिल जानी बोल मेरी रानी, एबीसीडी छोडो, सारे गम पध नि सा, आंखों आंखों में बात होने दो ने लोकप्रियता की ऊंचाईयां हांसिल कर फिल्म संगीत को एक नया आयाम दिया है।

काटे तो कुत्ता... पुचकारे तो पप्पी !

प्रकाश पुरोहित

तआदमी को इंसान कहना जितना मुश्किल होता जा रहा है ना, उससे ज्यादा दिक्कत आजकल श्वान को कुत्ता कहने में पेश आ रही है। सड़क वाले कुत्ते को ही आप उसके ओरिजनल नाम से पुकार सकते हैं, यानी कुत्ते को बेधड़क कुत्ता कह सकते हैं। अगर यही हरकत किसी घरवाले कुत्ते, सॉरी, डॉगी के साथ कर दी तो गुलाम तो कुछ नहीं करेगा, मालिक ही आप को भंभोड़ खाएगा!

इसीलिए आजकल समाचार-पत्रों ने भी कुत्ते को कुत्ता लिखना बंद कर दिया है। खबर छपती है- 'नगर निगम ने बारह श्वान पकड़े।' कुत्ते का उपयोग तभी होता है, जब यह बताना होता है कि इनके मुंह में दांत भी होते हैं और ये मानव शरीर, मुख्यतः टांग पर उपयोग करते रहते हैं। जब तक कुत्ता किसी को काटे नहीं, तब तक वह श्वान है, जैसे अपराध करने के बाद व्यक्ति, मुजरिम हो जाता है।

'क्या नाम है?' शाम को कुत्ता लिए घूम रही लड़की से पूछ लिया। जब मुझे कुत्ते से डर लगता है तो उसके मालिक से दोस्ती करने का यही तरीका आजमाता हूं।

'गुरुदत्ता... !'

'अच्छा, बंगाली हैं?'

'जी नहीं, लेब्राडोर है।' उसने गुस्से में जवाब दिया। तब मुझे समझ आया कि गुरुदत्ता तो कुत्ते का नाम है, जबकि मैं, लड़की का समझ रहा था। उस समय दोनों ही मुझे एक जैसे ही लग रहे थे। समझना मुश्किल था कि कौन, किसे घुमाने निकला है।

इन घरेलू कुत्तों की खासियत यह होती है कि इनके मालिक को पता होता है कि कुछ भी हो जाए, यह कुछ नहीं करेगा। अगर आप जरा भी छिटकने लगे या घबराने लगे तो मालिक की तरफ से यह आश्वासन फौरन आ जाएगा 'आप डरिए मत, यह कुछ नहीं करेगा।' उस दृश्य की कल्पना कीजिए कि उनका प्यारा 'कोको' आगे के दोनों पैर आपकी छाती पर रख कर चुंबन की मुद्रा में, आपके चेहरे के ठीक सामने जुबान लपलपा रहा हो तो यह सांत्वना-संवाद कितनी मदद करेगा कि 'यह कुछ नहीं करेगा।' कमजोर दिल तो उसी समय नापास हो जाए, यानी हार्ट-फेल। मुझे यह भी समझ नहीं आता है कि जब कुछ नहीं करेगा तो इसे पालने का क्या मतलब! किसी रोज, कोई, इसे ही उठा ले जाएगा, तब यह कहते भी नहीं बनेगा कि 'कुछ नहीं करता था।'

'बात उन पर ही खत्म होती है, हमसे चाहे कहीं की बात करो', यह शेर इन घरेलू कुत्तों के लिए ही लिखा गया होगा, जो बाद में लोगों ने सुविधा के लिए माशूका से जोड़ लिया है। कुत्ता-मालिक से हर रोज यदि कुत्ता-पुराण सुनते जाएं तो भी इनकी बातें कभी खत्म ना हों, जब तक कि कुत्ता जीवित है। कुछ तो दिवंगत होने के बाद तक भी बातों में उसे जिंदा करते रहते हैं।

'कल आप घूमने नहीं आए?'

'हां, बच्चू की तबियत खराब हो गई थी।'

'डॉ. तिवारी अच्छे हैं बच्चों के लिए, अपने मोहल्ले में ही तो हैं, उन्हें दिखा देते।' सलाह देना तो बनती है ना।

'वेटरनरी डॉक्टर को दिखाना पड़ता है, चाइल्ड स्पेशलिस्ट को नहीं।' तब समझ आया बच्चू इनके बच्चे का नहीं, डॉगी का नाम है। एक बात और, लिखने में ही कुत्तों को आदर से श्वान कहा जाता है, वरना कोई कितना ही कुत्ता-प्रेमी क्यों ना हो, श्वान तो नहीं कहेगा। 'मेरे श्वान का हाजमा ठीक नहीं है', कहेगा कोई, किसी से!

हर कुत्ते का दिन होता है या नहीं, यह तो नहीं पता, लेकिन हर कुत्ते का घरेलू नाम जरूर होता है। जिस तरह हम मनुष्य को मनुष्य नहीं कहते हैं, कपड़ों से या उनके धर्म से जानते-पहचानते हैं, वैसे ही कुत्तों को भी उनके नाम से जानना जरूरी हो जाता है। घर-स्वामी की औलादों के नाम यदि आपको याद नहीं हैं तो चलेगा, लेकिन कुत्ते का नाम भूल गए और पूछ लिया 'कुत्ता तो नहीं है बाहर?' तो हो सकता है आपको अंदर के बजाय बाहर का रास्ता दिखा दिया जाए। घर-स्वामी का नाम गलत हो जाए तो गंभीर अपराध नहीं है, लेकिन कुत्ते का नाम गलत बोल दिया तो आपकी इज्जत के खांकरे हो जाएंगे।

शेर और कुत्ते में यही बड़ा फर्क है कि जो होता नहीं है, खुद को शेर कहने में शरमाता नहीं है। 'अपन तो शेर दिल हैं, आप जानते ही हैं, अपन किसी से नहीं डरते या 'शेर दा पुत्तर' कहने का तो खास मजा है कि सुनने वाला और कहने वाला पिता-पुत्र खुश। कुत्ते का जिक्र तभी होता है, जब किसी पर गुस्सा आता है। अपने कुत्ते को कुत्ता कहने पर दुश्मनी पालने वाला बाप भी गुस्से में अपनी औलाद को कुत्ते का पिल्ला कहने में हिचकता नहीं है। खून पीने की चेतावनी से पहले 'कुत्ते' का जयघोष करना भारतीय फिल्मी नायकों की मर्दानगी की निशानी समझी जाती रही है। अब यहां लोग कंफ्यूज होते रहते हैं कि किसका खून पीने वाला है, कुत्ते का या खलनायक का!

अब तो हालत यह हो गई है कि कुत्ते भी इस बात का बुरा मानने लगे हैं कि उन्हें कुत्ता कहा जा रहा है। आप ही बताइए कि किसी के घर गए हैं और कुत्तों की नस्लों का ज्ञान नहीं है तो बातचीत का रन-वे बनाने के लिए कुत्ते से बढ़िया टॉपिक और क्या हो सकता है। आप सीधे-सीधे यह तो नहीं पूछ सकते कि इस कुत्ते का नाम और वंशावली क्या है! यह तो आपको ही ताड़ना होता है कि 'बबली' कहा है तो बच्ची आए तो बच्ची, कुतिया आई तो, डॉगी!

जो कुत्तों के साथ नहीं पलते हैं, उन्हें कुत्ता-परिवार में हिंसक नजरों से देखा जाता है। कुत्ते और मालिक की नाक में यह समानता होती है कि दोनों सूंघ लेते हैं कि घर में कुत्ता है या निपट मनुष्य!

अरे! सब चलता है... क्यों चलता है?

क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

पुराने समय में जैसे चलता था कि एडवांस्ड चीज पर शोर होता था। लव मैरिज, इंटरकास्ट मैरेज, विधवा विवाह वगैरह-वगैरह धीरे-धीरे लोगों ने उसे स्वीकार करना शुरू कर दिया है जाति विशेष को छोड़कर। अब मेरी ही दो सहेलियां खुसर पुसर कर रहीं थी, 'फलानी सहेली के पति का एक्स्ट्रा मेरिटल अफ़ेयर (विवाहेत्तर संबंध) है। इतना शोर मचा रही है कि डिप्रेशन में जा रही है। अरे, सीधे जाए उस औरत को दो थप्पड़ लगाए और पति को भी। और ज़्यादा हो तो छोड़ दे। उसके दो छोटे बच्चे हैं।'

आपकी बहन, मां, बेटी के साथ हो तब भी आप उसे यही सलाह देंगी? जिसके दिल पर गुज़री है उस का दर्द आप समझ नहीं पा रही हैं। उस धोखा खाई औरत का दर्द जो अभी भी सदमें में है। चलो माना वक़्त सब जख़्म भर देगा। फिर बच्चों की परवरिश की चिंता, भले ही पढ़ी लिखी हो पर इस उम्र में कौन बहुत अच्छी नौकरी मिलेगी? बच्चों को उनके पिता ने बड़े शान औ शौकत से पाला है। बड़े होकर कहेंगे, आपकी लड़ाई के कारण हमें अच्छे स्कूल कॉलेज नहीं मिले। समाज वैसे भी उसे संदेह की नज़रों से देख रहा है, ज़रूर इसमें ही कोई गल्ती होगी। दिखती भी तेज है।

लीजिये अब लोगों से मिलना जुलना भी बंद। कितना दर्द होता है आज भी चाहे पढ़ी लिखी हो या अनपढ़ कोई औरत दूसरी औरत को अपनी ज़िंदगी में बर्दाश्त नहीं कर सकती। सब चलता है लिव इन इसका दूसरा भाग है। अब यहां दो पार्ट हो गये हैं। एक स्वेच्छा से दोनों कुंवारे साथ में रह रहे हैं बच्चे भी पैदा नहीं कर रहे हैं। पांच साल, दस साल, फिर झगड़े शुरू हो जाते हैं। ये वो लोग हैं जो दरअसल आपस में पति पत्नी की तरह व्यवहार करते हैं, हक़ जमाते हैं पर जब जिम्मेदारी की बात आती है तो हम तो बस पार्टनर हैं इसीलिये हमने शादी नहीं की। मैंने तो ये भी सोचा भला हो आपने बच्चे भी नहीं किये।

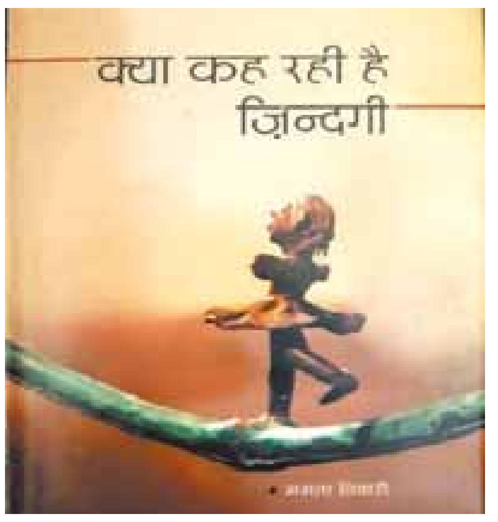

हाँ, तीसरा मुद्दा आजकल जोर मारने लगा है। हमें बच्चा चाहिए पर हम शादी नहीं करेंगे। फिल्म इंडस्ट्री गवाह है तुषार कपूर, करन जौहर, सुस्मिता सेन। खैर, सुस्मिता सेन को अलग रखें। उन्होंने नेक काम से बच्चे एडाप्ट किये हैं।

अब दो समस्याएं समाज के सामने है। अगर व्यक्ति अपनी बीवी को धोखे में रखता है, अपनी 'कीप' को भी धोखे में रखता है। बच्चे भी पैदा करता है। अक्सर अधिकार और कानून के मामले में दूसरी बीवी बाजी मार ले जाती है। हमारे कानून के हिसाब से पति को दोनों बीवियों का खर्च उठाना पड़ेगा और दोनों हाथों में लड्डू भी रहेगा। वहीं, लिव इन में भी यही बात है। अगर आदमी ने लिव इन पार्टनर से शादीशुदा होने की बात छुपाई और शादी भी नहीं की शायद बच्चे भी कर लिये तो अब इस नाजायज रिश्ते को भी समान कैटेगरी में रखा जायेगा। दोनों का खर्चा उठाना पड़ेगा। हाँ, शादी के लिये फिलहाल कोर्ट ने ये कानून नहीं बनाया कि दूसरी से भी शादी करो। वैसे उससे क्या फर्क पड़ता है? पहली पत्नी सारी ज़िंदगी तड़पेगी, दर्द झेलेगी उसका घाव नहीं भरेगा। धोखा खाई 'कीप' भी उसी तरह दुःखी रहेगी। इसे प्यार नहीं कहते। हवस के लिये आदमी दो औरतों मासूम बच्चों का बचपन हमेशा के लिये खराब कर दिया और कानून ने उसी के पक्ष में फैसला कर दिया कि भई अपराध तो तुमसे हुआ है पर कानून तुम्हें दोनों को खुश रखने की सजा देता है (हालांकि अब वो ज़्यादा खुश है कानूनी तौर से दोनों के साथ रहेगा)।

हमारे देश की जनसंख्या इतनी ज़्यादा है तो बड़े बड़े फिल्म स्टार सरोगेसी से बच्चे पैदा कर रहे हैं। दो बच्चे होते हुये तीसरा बच्चा पैदा कर रहे हैं क्योंकि उनका धर्म इसकी इजाज़त देता है, पर शाहरूख खान चाहें तो पूरा अनाथ आश्रम चला सकते हैं। आमिर खान के इतने बड़े बच्चे हैं पर फिर भी उन्होंने दूसरी पत्नी से सरोगेसी से बच्चा किया, वो भी सत्यमेव जयते वाले हैं चाहे तो अनाथ बच्चे गोद ले सकते हैं। उनका धर्म उन्हें सब इजाज़त देता है। खैर, मैं मानती हूँ कलाकार समाज के लिये आदर्श होते हैं और उसका कोई धर्म नहीं होता, हाँ ह्यूमन बीइंग वाले सलमान से उम्मीद की जा सकती है वो जितने चाहे अनाथ बच्चे गोद लें, पर वो ले ही नहीं रहे।

भई, हम ठहरे पुराने ख़्यालों के, पर दिल चाहें नयों के हो, पर इन गलत रिश्तों से पीड़ा सभी को होती है। कानून को कुछ और बदलाव लाने चाहिये। यदि आप शादीशुदा होकर कही इन्वाल्व हो तो भगवान के लिये बच्चे ना करना, उनका कोई कुसूर नहीं पर वो नाजायज हो जाते हैं। शोचनीय विषय है कि मत बिगाड़िये किसी की ज़िंदगी ये ज़िंदगी है मनोरंजन या दिल बहलाने का सामान नहीं, फिर बाद में पछताते रहना होगा। तुम लाख करोगे रिश्तों में मिठास लाने की, लेकिन शीशे में आया बाल निकाल सकोगे क्या? आज बहुत उदास है ज़िंदगी।

व्यथा...

मेरा आदर परछाई की तरह है लंबा विशाल सुनने में कर्णप्रिय। पर मेरी दशा भिक्षुणी से बदतर है। मेरी व्यथा यह कि हमारे देश में शाब्दिक आदर देकर एक रस्म अदायगी होती है।

फोटो- बंसीलाल परमार

यह साइबर अरेस्ट नहीं, दिमाग का अरेस्ट है

मुद्दा

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

वरिष्ठ मनोचिकित्सक एवं मनोविज्ञान विश्लेषक

डिजिटल युग में तकनीक का अत्यधिक उपयोग हमारी जीवनशैली ही नहीं, बल्कि हमारे मानसिक स्वास्थ्य को भी गहराई से प्रभावित कर रहा है। साइबर अपराध, विशेष रूप से 'साइबर अरेस्ट', हमारे डर, चिंता और असुरक्षा का शोषण करता है। यह केवल आर्थिक धोखाधड़ी नहीं, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक हमला है।

कैसे होता है दिमाग का अरेस्ट?

भय का निर्माण- आपके खिलाफ कानूनी कार्रवाई होगी, जैसी धमकियां हमारे दिमाग को तर्कहीन बना देती हैं। यह हमें तुरंत प्रतिक्रिया देने पर मजबूर करती हैं।

तात्कालिकता का दबाव- अभी पैसे न दिए तो समस्या और बढ़ जाएगी, जैसी बातें हमें सोचने का समय नहीं देतीं। यह मानसिक थकान और घबराहट को बढ़ाता है।

सामाजिक प्रतिष्ठा का डर- अपराधी हमारी सामाजिक छवि को लेकर असुरक्षा का लाभ उठाते हैं। यह डर हमें मानसिक रूप से अस्थिर कर देता है।

भावनात्मक हेरफेर- अपराधी हमारी सहानुभूति, अपराधबोध और सामाजिक स्वीकृति की जरूरत को निशाना बनाते हैं। यह मानसिक तनाव और अस्थिरता का कारण बनता है।

मानसिक प्रभाव

चिंता और तनाव- साइबर अरेस्ट की घटनाएं घबराहट और अवसाद पैदा कर सकती हैं।

निर्णय लेने की क्षमता पर असर- लगातार डर और दबाव हमारी निर्णय लेने की क्षमता को कमजोर कर देता है।

भावनात्मक थकावट- बार-बार मानसिक हेरफेर का सामना करने से हम थके हुए और असहाय महसूस करते हैं।

सामाजिक अलगाव- इन घटनाओं के कारण शर्मिंदगी और अपराधबोध हमें अपने परिवार और दोस्तों से दूर कर सकता है।

दिमाग को हाईजैक से बचाने के उपाय

भावनात्मक स्थिरता बनाए रखें- किसी भी धमकी भरे कॉल या मैसेज पर तुरंत प्रतिक्रिया न दें। गहरी सांस लें और स्थिति का मूल्यांकन करें।

सत्यापन करें- किसी भी अनजान जानकारी या कॉल की सत्यता जांचने के लिए सीधे संबंधित अधिकारियों से संपर्क करें।

मनोवैज्ञानिक सहायता लें- साइबर अपराधों का सामना करने के बाद मानसिक तनाव महसूस हो तो मनोचिकित्सक से संपर्क करें।

डिजिटल सीमाएं तय करें- डिजिटल उपकरणों का अत्यधिक उपयोग मानसिक थकान को बढ़ा सकता है। नियमित ब्रेक और सीमित स्क्रीन समय अपनाएं।

जागरूकता बढ़ाएं- साइबर अपराधों के मनोवैज्ञानिक प्रभावों के प्रति खुद को और अपने आसपास के लोगों को शिक्षित करें।

साइबर अरेस्ट केवल तकनीकी अपराध नहीं है; यह एक मानसिक हमला है जो हमारे डर और भावनाओं का शोषण करता है। जागरूकता और मानसिक मजबूती ही इस अपराध से बचने का सबसे प्रभावी तरीका है। आइए, डिजिटल सुरक्षा के साथ अपने मानसिक स्वास्थ्य का भी ख्याल रखें और खुद को इस अरेस्ट से बचाएं। आपका मन, आपका सबसे बड़ा संसाधन है - इसे सुरक्षित रखें।

सुनो, छोटे से देश की लंबी कहानी !

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

धइंसानों के दो नाम आम है। कई हैं, जिनके सरकारी कागज पर अलग नाम हैं और जिंदगी में अलग, लेकिन ताइवान इकलौता देश है, जो दो नामों से जाना जाता है। इस देश की अपनी सरकार, संविधान, नियम-कायदे हैं, लेकिन सरकारी तौर पर यह चीन का हिस्सा है। इतना ही नहीं, ओलिंपिक में ताइवान की टीम शामिल तो होती है, लेकिन उनके देश का नाम चाइनीज ताइपेई हो जाता है। अगर कोई खिलाड़ी पदक जीतता है तो ताइवान का नहीं, चीन का राष्ट्रीय गीत बजता है।

इसी साल पेरिस ओलिंपिक से वीडियो आया, जिसमें खिलाड़ी आंसू भरी आंखों से उस झंडे को देख रहे हैं, जो उनके देश का ही नहीं है। चीन से ताइवान उसी तरह अलग है जैसे भारत से श्रीलंका। ताइवान अलग आइलैंड है। यहां चीन से लोग आए, लेकिन यह टापू चीन से अलग ही रहा। इस देश के इतिहास में चीनी शासन पांच साल के आसपास का है। चीन इस पर अपना हक यूं जता रहा है जैसे बाप-दादा की जागीर हो।

अमेरिकी डायरेक्टर वेनेसा होप की डॉक्यूमेंट्री फिल्म **'इनविजिबल नेशन'** दिखाती है कि किस तरह से चीन ने पूरी दुनिया से ताइवान को अलग कर रखा है। यह ऐसा ही है कि न किसी से मिलने देना, न दोस्ती और जो भी नजदीक आए, अड़ंगे डालना। ताइवान की राष्ट्रपति तसई इंग वेन (पहली महिला राष्ट्रपति) पिछले महीने यूके आने वाली थीं, लेकिन चीन के दबाव में दौरा टाल दिया। ओलिंपिक में किसी खिलाड़ी ने ताइवान का झंडा लहरा दिया तो उसे माफी मांगनी पड़ी।

तसई का कहना था कि हमें अपनी खुदमुख्तारी का दावा करने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि हम आजाद हैं और शायद यही वजह रही कि चीन से संबंध बिगड़ ही रहे हैं। ताइवान की मौजूदगी को चीन लगातार छोटा और कम करने की कोशिश में लगा है। फिल्म में डॉक्टर बताते हैं कि कोरोना में डब्ल्यूएचओ से भी मदद नहीं मिली थी। फिल्म से साफ समझ आता है कि अमेरिका और चीन के रवैये से यह छोटा, लेकिन प्यारा देश इस हाल में है। तीन बरस में जिस तरह से यूक्रेन और गजा पर हमले हुए हैं, उससे भी ताइवान में तनाव बढ़ा है, क्योंकि अगर चीन ऐसा कुछ करता है तो ताइवान की छोटी-सी सेना चीन का मुकाबला नहीं कर पाएगी।

लगभग डेढ़ घंटे की डॉक्यूमेंट्री में बहुत अनजानी बातें हैं। इस पर ज्यादा जोर है कि लोग समझें कि ताइवान किस मुश्किल दौर से गुजर रहा है। मौका मिले तो जरूर देखें, क्योंकि इस देश के खिलाफ हो रही साजिश में दुनिया भर की आवाजों का एक साथ शामिल होना जरूरी है।